विषयसूची

विषय	खण्ड	अध्याय	इलोक	पृष्ट संख्या
ग्रन्थावतार	9	9	.44	१
सकल-निष्कल-प्रणिधान	9	9	9	9
लीलावताररूप-प्रणिधान	9	9	ą	
सत्रविचार (टी.)	3	9	3	٦ ٦
चाक्षुषी दीक्षा (टी.)	9	9	ų	8
अष्टादञ पुराण	9	9	· •-99	8
अष्टादश उपपुराण	9	9	93-96	4
स्कन्द पुराण निरूपण	9	9	99-28	Úę.
सूतसंहिता निरूपण	9	9	24-32	Ę
सर्वाध्याय-विषय (टी.)	9	9	३ २	(g)
पुराण-लक्षण	9	9	3 3	۷
वेद अविरुद्ध	9	9	३७	۷
स्मृति कर्मप्रधान, पुराण ज्ञानप्रधान (टी.)	9	9	89	8
व्यासकृत सम्प्रदायप्रवर्तन (हि.)	9	9	8.3	90
व्यास सर्वज्ञ	9	9	४७	90
सूतकृत स्तुति	9	9	48-44	99
पाञ्चपत ब्रत	9	9		9.9
जगत् जन्य अतः सकारणक	9	4	9	9.2
पशु व प्रकृति की अकारणता	9	3	2	9 9
तत्त्वशब्दार्थ (टी.)	9	9	U	9 ₹
एक शिव ही कारण है	9	2	۷	93
माया	9	2	3	98
देवकृत चत	9	3	93-99	94
सोम-सन्निधि	9	2	₹₹-₹9	9 &
सोम—उपदेश	9	2	38-36	96
ईक्बर-प्रतिपादन	9	3		50

[2	1				
	सर्वपूज्य विषयक प्रश्न	9	ą	9-7	₹0
	विष्णु का मोह	9	₹	8-0	₹0
	नन्दिकेश्वर का उपदेश : शंकर परमेश्वर	9	ą	97-79	39
	देवकृत वृषवाहन-स्तुति	9	ą	38-85	23
	अहेयमात्र-गुणस्वीकरण अयुक्त (हिं.)	9	3	3.3	28
	ईश्वर-पूजा-विधान	9	8		२७
	लिंगलक्षण (टी.)	9	8	8	30
	आयाहन—विसर्जन	9	8	٩	35
	आश्रमभेद से मंत्रव्यवस्था	9	8	9 3	26
	स्त्रियों के लिए पंचाक्षरमंत्र	9	8	98	28
	मंदिर को प्रणाम करना पूजा है	9	8	9 ६	38
	ज्ञूदादि को भी पंचाक्षर में अधिकार (टी.)	9	Я	9 ६	28
	तीर्थसेवा से मोक्ष	9	8	89-84	₹9
	शक्तिपूजाविधि	9	4		33
	पराशक्ति (टी.)	9	4	3	₹ \$.
	वैदिक-तान्त्रिक विभाग	9	ię.	8-4	33
	बाह्यपूजा	9	4	६− ७	38
	मातृका-विचार	9	ų	8	38
	आभ्यन्तर-पूजा	9	4	99	34
	संविद्वाचक शब्दडय	9	4	90	3 &
	ज्ञियभक्तपूजाविधि	9	Ę		2€
	अष्टिविधभक्ति (टी.)	9	Ę	9	₹८,
-	भक्त कौन (हिं.)	9	Ę	8	9 €
	वाराणसी आदि तीर्थसेवन	9 .	Ę	90-42	38
	मुक्तिसाधन-प्रकार	9	v		XX
	ज्ञान ही मोक्षसाधन	9	w	9 ६	४६
	ज्ञान हा नावसायन ज्ञानाधिकारी	9	৩	98	४६
	ज्ञाना।धकारा द्विज स्त्रियों को श्रौत ज्ञान में अधिकार	9	Ø	30	४६

×				[3]
ज्ञूद का पुराण में अधिकार	9	9	3.9	४६
भाषान्तर ग्रन्थ भी उपकारक	9	· ·	2.2	४७
'विद्यां चाविद्यां च' मंत्र का अभिप्राय (र्ट	n.) 9	O	२६	86
तीर्थसेवा का साफल्य	9	9	94-80	88
कालपरिमाण और काल से अनवश्चित्र स	वरूप १	۷		42
काष्टा, निमेष आदि अवयव	9	4	3	43
देवताओं के अहोरात्र	9	۷	Ę	43
चार युग	9	۷	4-99	48
मन्यन्तर	9	۷	9 २	48
कल्प	9	۷	93	48
द्विपरार्ध	9	4	98	48
विलय	9	۷	94	44
माया आदि नाम-सार्थक्य	9	4	96-29	44
परमकाल	9	۷	२ २	५६
शिव काल से अनवच्छित्र	9	۷	28	५६
शिय सर्वकारण	9	۷	२६	40
गुणमूर्तिवर्णन	9	۷	₹0-३२	40
रुद्रमूर्ति का वैशिष्ट्य	9	۷	80	49
महादेव ही प्रतिपाद्य	9	۷	86	
पृथिवी का उद्घार			0.0	ξO
- नारायणनाम का निर्वचन	9	9	152	६२
ब्रह्मर्षियों द्वारा विष्णुस्तोत्र			Ø	६३
ब्रह्मसृष्टि	9	9	92-38	६३
V. 1977	9	90		६६
सर्गक्रम (टी.)	9	90	?	६६
तम, मोह आदि का स्वरूप (हिं.)	9	90	3	६७
युक्षादिस र्ग	9	90	4	६७
विसर्ग	9	90	9	६७
गनुषसर्ग	9	90	99	ĘC

7) (2)				
भूतादिसर्ग	9	90	93	६८
महान्, तन्मात्रा आदि की सृष्टि	9	90	98	६८
कौमार सर्ग	9	90	96	६९
अर्धनारीक्चर का प्रादुर्भाव	9	90	₹9	00
रुद्र का अशुभ सृष्टि न उत्पन्न करना	9	90	३६	00
पंचीकरण	9	90	9 €	19
मरीचि आदि साधकों की उत्पत्ति	9	90	४२	७१
असुरसृष्टि	9	90	४६	19
रात्रि आदि की सृष्टि	9	90	४७	७२
मृष्टि स्वप्नसम है	9	90	46	७२
हिरण्यगर्भादि विशेषसृष्टि	9	99		७३
क्लेशमूलक सृष्टि (टी.)	9	99	3	७४
ज्ञानशक्ति आदि का जन्म	9	99	8	७४
अंतर्यामी	9	99	90	७५
स्वराट्, सम्राट्, विराट्, स्वराट्	9	99	92-98	७५
मनु-शतरूपा	9	99	94	७६
दक्ष की चौबीस पुत्रियाँ (टी.)	9	99	98	७६
स्वभाववादनिरास	9	99	२ २	७७
कर्मवादनिरास	9	99	₹ ₹	७७
जन्मादिविषयक ईश्वरोपदेश	9	99	₹४	90
शिवज्ञानरूप पुण्यादि (हिं.)	9	99	३७	92.
जाति निर्णय	9	9 3		७९
स्वधर्म	9	9 २	40	٤٤
जाति जन्मना	9	9 २	49	68
आत्मा की जातिरहितता	9	92	49	68
अपरोक्ष ज्ञानी अनियोज्य	9	9 २	44	24
आत्मसाक्षात्कार के विना वर्णादिधर्म अत्याज्य	9	9 3	46	64
कर्म व त्यागादि का क्रम (हिं.)	9	9 7	49	۷ ξ

तीर्थमाहात्स्य	9	93		[5
गंगाडार	9			८६
सोमतीर्थ	9	93	3	20
वाराणसी में मणिकर्णिका		93	4	८७
प्रयाग	9	93	٩	८७
गंगासागर		93	99	৫৩
नर्मदा	9	93	93	20
यमुना	9	9 3	3.8	20
सरस्वती	9	9 3	9 &	219
गोदावरी	9	9 3	96	66
कृष्णवेणी	9	9 ₹	₹0	44
ट सुवर्णमुखरी	9	93	२२	44
कम्पा	9	93	२६	22
कुटिला	9	93	3 3	८९
	9	93	3 6	८९
मणिमुक्ता	9	93	४६	90
व्याष्ट्रपुर में शिवगंगा	9	93	પ પ	90
गुह्यतीर्थ	9	93	Ę 9	99
ब्रह्मतीर्थ	9	93	७२	99
सूर्यपुष्करिणी	9	93	७६	99
व्वेतारण्यादि में कावेरी	9	93	20	99
क्षीरकुण्ड	9	93	99	93
देवतीर्थ	9	93	98	93
गन्धमादान	9	93	909	
ज्ञानयोगपरम्परा-कथन	२	w 9	101	£9
सहेतुक ज्ञानयोग का प्रश्न	2	9	90	९६
आत्मा द्वारा की गयी सृष्टि	٩		76	१७
अधिकारि-त्रैविध्य (टी.)	٠ ٦	3		94
		2	9-2	96
िहोवेतर का निषेध (हिं.)	?	3	3	99

सत्त्वक्षोभ से महत्तत्त्वादि				
शिव की तीन मूर्तियाँ	٦	4	8	99
इाब्दादि य इंद्रियादि की स ुद् रि	3	2	γ −ξ	99
काल का लक्षण	3	२	9-0	99
प्रथम शरीरी	4	2	90	99
प्रसाद से सामर्थ्य	3	2	9.9	900
ज्ञान से ही मोक्ष	Ŕ	2	93-96	900
	2	7	98	900
बृहस्पतिकृत शिवस्तोत्र	9	3	₹₹—₹9	909
प्राणायाम से प्राणरक्षा	2	9	79	909
ब्रह्मचर्याश्रमविधि	3	3	110.45	903
भस्मनिर्माण धारणादि (टी.)	3	3	ø	
ब्रह्मचर्य से संन्यास	2	3	24	903
गृहस्थाश्रम-विधि	२		44	904
किन से दान लिया जा सकता है (हिं.)	2	8		904
यति को भिक्षा देने की महत्ता	٠ ٦	8	(S	908
गृहस्थ एक वार भोजन करे		8	94-95	900
त्रिपुण्ड्र-धारण आवश्यक	3	8	90	900
The state of the s	2	8	₹9	900
रुद्राक्ष धारण करे; शिवार्चन करे	3	8	58	904
गार्हस्थ्य से संन्यास	2	8	99	906
आश्रम-विकल्प	2	8	₹9	908
वानप्रस्थाश्रम विधि	₹	4		909
पंचयज्ञ (टी.)	4	4	4	990
पंचविध चान्द्रायण (टी.)	3	4	9	990
वानप्रस्थ से संन्यास	2	4	9 €	999
संन्यासविधि	2	Ę		993
चतुर्विघ भिक्षु	4	Ę	9	997
कर्मत्यागी की ही ब्रह्मनिष्टा (टी.)	3	Ę	9	993
कुटीचक	3	Ę	3-4	997

बहूदक				[7]
в ' स	7	Ę	4-90	993
033	2	ξ	99-98	993
परमहंस	4	Ę	94-20	993
प्रणवजप	4	Ę	२८-२९	994
उत्तमाश्रम से निम्नाश्रम में जाना निषिद्ध	3	ξ	3.9	994
वेषमात्र से संन्यासी पूज्य	9	Ę	3 &	995
तत्तदाश्रमियों के तत्तद् देवता	4	Ę	35-05	995
प्रायिक्चित्तविधि	4	lo e	ann sases	990
महापापी	3	to .	3	990
ब्रह्महत्या का प्रायिश्चत्त	2	(S	₹-9	9919
सुरापान का प्रायश्चित्त	2	19	9-99	996
स्वर्णस्तेय का प्रायश्चित	2	v	92-93	996
गुरुतल्पगमन का प्रायक्ष्यित	2	v	98-94	994
महापापिसंग का प्रायश्चित्त	9	9	98-90	996
अगम्यागमन के प्रायश्चित	۹ .	(g	96-39	996
सब पापों का प्रायश्चित्त	3	o	₹ २ —३७	930
दानधर्म का फल	4	۷	WAR WARES	979
अमावास्यादि तिथियों पर विभिन्न दान	2	۷	C-25	922
सब कामनाओं की सिद्धि के लिये विद्वत्सेयन	2	c	26	9 2 3
कामभेद से पूज्य देवताओं का भेद	2	د	33-34	978
ब्रत के लिये श्रद्धा-भक्ति अनिवार्य	٠ ٦	L	35	978
शतरुद्रीय-अभ्यास का फल				
Caller-Control of 1989 W	3	۷	98-28	928
चमकाध्याय आदि के जप का फल	4	د	\$0-8 \$	978
र्कर्म में प्रवृत्ति भ्रममूलक	₹	۷	88-80	924
/ पापकर्मों का फल	2	٩		924
न्यायवित्तर्यौ का प्राशस्त्य (टी.)	3	9	90	9 २ ६
्रमन्दिरादि में उपद्रय करने का फल	2	9	२४२६	920
्र आचार्यनिंदा-श्रवण का फल	3	9	29-72	970

8]	2	9	3 &	920
ज्ञान से ही सर्वपापनिवृत्ति		90	16.	929
पिण्ड की उत्पत्ति	۹		3	9 7 9
आहुति, सूर्यादि क्रम से शरीरोत्पत्ति	3	90		939
– गर्भ में महादुःख	4	90	22	932
्रगर्भस्थ की प्रतिज्ञा	₹ /	90	₹३—२९	
्र आत्मापहारी चोर	₹ /	90	30	933
बृहस्पतिकृत शिवस्तव	4	90	85-44	938
नाडीचक्र-निरूपण	3	99		934
मूलाधार	3	99	Ę	934
मुख्य चतुदर्श नाडियाँ	?	99	2-90	935
कुण्डली	२	99	93	9 ₹ €
दश प्राण	3	99	२५-२७	930
नाडियों के अधिष्ठाता देवता	4	99	30-80	936
देह में विषुव, अयन आदि	٩	99	89-86	938
देह में तीर्थ	3	99	40-49	980
आत्मतीर्थ	3	99		989
बृहस्पतिकृत महादेवस्तुति	3	99	50-60	989
स्तोत्र की फलश्रुति	3	99	७९-८३	983
नाडी-शुद्धि	3	93		988
साधनायोग्य स्थान	Ŕ	97	3-4	988
प्राणायाम सहकृत चिन्तन	2	93	90-94	984
स्वात्मशुद्धिः विवेक	2	9 7	96	१४६
यम-विधि	2	93)3	980
दस यम	२	93	3	980
तितिक्षा-क्षमा (हिं.)	2	93	93	988
ज्ञानशुद्ध का अकर्तव्यशेष	2	93	29	949
नियम-विधि	2	98		
दस नियम	₹	98	9-2	7.7.7

				[9
ईञ्चर-पूजन	4	98	90-99	943
बेदबाह्य स्मृति आदि की व्यर्थता	4	98	96	943
यथाञ्चिक नित्यादि कर्म अवश्यकर्तव्य (हिं.)	2	98	99	948
व्रत	2	98	२५	944
शिरोब्रत	2	98	२७	944
आसनविधि	9	94		१५६
नव मुख्य आसन	4	94	9-2	948
ध्यानादि बैटकर ही करे (हिं.)	3	94	94	946
प्राणायामविधि	2	9 ६		946
प्राणायाम प्रणयमय	2	9 Ę	3	946
मात्रा-लक्षण (टी.)	2	9 ६	3	949
शूद्र व स्त्रियों के लिये मंत्रान्तरघटित प्राण	ायाम २	9 &	98-94	9 & O
प्राणायाम के फल	2	9 ६	9 ६	9 € 0
अधम, मध्यम, उत्तम प्राणायाम	3	9 &	२ 0	950
उदरादि में प्राणधारण	2	9 ६	26	9 5 9
प्राणायाम से रोगनिवृत्ति	7	9 ६	₹0	9 & 9
उत्कर्ष प्राणायाम (टी.)	3	95	88	9
वायुजय	9	9 Ę	88	9 & 3
कर्म से मोक्ष नहीं	4	9 ६	49	9
प्रत्याहारविधि	3	90		950
नानाविध प्रत्याहार	2	90	२—9 ६	960
धारणा-स्थान (टी.)	3	9 0	9 २	956
वेदान्तज्ञों द्वारा प्रोक्त प्रत्याहार	2	90	9 ६	9
धारणाविधि	3	96		9
हकारादि वर्णौ का प्रयोग	2	96	1	900
धारणा में श्रौत प्रमाण (टी.)	2	96	ą	900

[10] 8-E देह में पृथ्व्यादि व ब्रह्मादि 0-90 मनआदि में धारणा 99-93 अन्य धारणा (परा धारणा) एक और धारणा (पूजिता धारणा) 94-98 ? 'ब्रह्मैवाहम्' धारणा ध्यानविधि सगुणध्यान (उमार्धदेह) परिशय का ध्यानान्तर (हिरण्यश्मश्र आदि) गंगाधर का ध्यान 97-79 विष्णुहृदय में ज्ञिव का ध्यान ब्रह्मा के हृदय में ज़िव का ध्यान 22-23 अहंबुद्धि से ईशान का ध्यान 87-58 निष्कल विषयक ध्यान लक्ष्यार्थमात्र का अनुसंधानात्मक ध्यान विष्णु आदि के ध्यान ध्यानफल समाधिनिरूपण जीव का परमात्मा से अभेद 2-8 मायिक भेद विवेकधी समाधि 5-3 प्रपंच का बुद्धि से विलयकर अद्वितीय में समाधि 9-97 प्रणव के सहारे समाधि 93-99 आत्माऽभेद-चिंतनात्मक समाधि 20-29 उक्तसमाधि का फल 3.0 23-28 ज्ञानमहात्स्य 35-6E ज्ञानी की प्रशंसा 36-80 बृहस्पति की कृतार्थता

43-48

मुनियों को वेदमार्गस्थापन की प्रेरणा

ज्ञानयोगखण्ड की फलश्रुति		924		[11 j
A STATE OF THE STA	3	3	45-60	928
मुक्ति आदि विषयक चतुर्विध प्रश्न	3	9		960
शंकरवन्दना	3	9	9-6	925
	3	9	6-10	966
सूतजी के प्रति मुनियों का चतुर्विध प्रश्न	. 3	9	35-0€	990
मुक्तिभेद	ą	3		990
नारायण की तपश्चर्या	3	4	9-6	980
रसत्र शिव का स्वरूप वर्णन	ş	2	9-90	999
वेष्णुकृत प्रश्न	3	9	43-48	993
प्तालोक्यादि मुक्तियाँ (टी.)	3	2	26	988
ज्ञानफल मुक्ति	3	۹ .	₹0-₹4	994
अन्य मोक्षों की अपरमता	3	3	34-30	१९६
अन्य मोक्ष भी अत्यंत शुद्ध चित्त वालों को				
ही प्राप्य	3	2	3 €	१९६
शं करसारूप्य, मुकुन्दसारूप्य आदि भेद से				
मोक्षांतर नानाविध	3	2	38-8€	990
अधिकारिभेद से मुमुक्षाभेद	3	2	80-86	996
परममोक्ष	3	2	49-43	992
बीयन्मुक्ति	4	2	५४–५६	996
वेदेहमुक्ति	3	₹	५७–५८	988
मोक्ष भी व्यवहारमात्र	3	२	49-E0	999
मुक्ति के उपाय	3	3		900
ु महातात्पर्य-अवान्तर तात्पर्य (टी.)	3	3	2	₹09
तत्त्वज्ञान से ही मोक्ष	3	ą	9-90	₹0₹
कर्म से मोक्ष नहीं	ą	3	92-93	₹ 0 ₹
कर्म से अपर मोक्ष	3	3	98	₹0३
द्विविध कर्म	3	3	94	₹03
आन्तर कर्म का फल	ą	ą	9 ६	50 R
बाह्य कर्म का फल	3	3	80	206
	ą	3	49	206
मानसकर्म की विशेषता		0.500		

कर्मत्याग ज्ञान का अंग	3	3	42-43	206
वाराणसी आदि में वास का महत्त्व	3	3	43	208
प्रणवजप से मरणान्तर ज्ञानलाभ	3	ą	44	₹09
पंचाक्षर से भी मरणोत्तर ज्ञानप्राप्ति	3	3	५६	308
शतरुद्रीय के जप से परा गति	ą	3	46	308
अश्रद्धालु पापियों की मुक्ति का उपाय	3	3	€ 9	390
वेदारण्य माहात्म्य	3	3	ĘC	390
मोचक कथन	ą	8		294
सरस्वती वर्णन	3	Я	₹-७	294
पशु आदि पदार्थ	3	8	. 9	२१६
श्रुति का प्रामाण्य	3	8	99	₹9६
प्रमाणों में बलाबल (हिं.)	Ę	8	9 7	२१६
पाञ्चरात्रादि का वेदबाह्यत्व	3	8	94-98	२१८
दक्षिणामूर्ति सम्बन्धी आख्यान	3	8	₹9	२२0
दक्षिणामूर्तिशब्दार्थ (हिं.)	3	8	84	229
मोचकप्रद	3	4	a it	२२३
आचार्य ही संसार से छुड़ाने वाले हैं	3	ų	4	223
्रे उत्तमादि त्रिविध आचार्य	3	4	8	२२३
(पाँच प्रकार के उत्तम आचार्य	3	ų	9	२२४
अतिवर्णाश्रमी का लक्षण	3	4	95-35	२२५
बाधितानुवृत्ति : तीन अविद्यावस्थायें (टी.)	3	4	. २८	२२६
अतिवर्णाश्रमी का अनुभव	ą	4	33	226
ज्ञान उत्पन्न न होने के कारण	₹	ξ		239
शिवद्रोह (हिं.)	₹	ξ		. २३१
शिवभक्त के प्रति अपराध आदि अन्तराय	₹	ξ	7.3	239
काम, क्रोध आदि के लक्षण (हिं.)	3	Ę	· ξ	239
गोरक्षा न करना ज्ञानोत्पत्ति में प्रतिबंधक	3	€	9 ६	२३२
जुआ, अपशब्द प्रयोगादि से ज्ञान में विघन	ą	Ę	. 44	233

				[13]
गुरूपसत्ति व गुरुसेवा	₹	19		234
विद्वान् की सेवा की महत्ता का आख्यान	3	Ø	2	434
एक अन्य कथा	3	Ø	86	580
ज्ञिवज्ञान के बिना मोक्ष असंभव	ą	9	७४	२४३
ज्ञानी का उपदेशकत्य (टी.)	3	ø	७६	488
जीवन्मुक्ति स्वानुभवगम्य (हिं.)	ą	ø	92	२४४
देवोपदेश	₹	۷		२४६
देवों को विष्णुद्वारा शिव से उपदेशग्रहण की				
प्रेरणा	ą	4	6	२४६
व्याघ्रपुरमहिमा (टी.)	3	۷	8	२४६
वटच्छायाश्रित शिव (दक्षिणामूर्ति)	ą	۷	94	288
स्वाभाविक आनंदका और ज्ञान का द्वैविध्य				
(ਹੀ.)	ą	۷	२७	240
देवों के प्रति महादेव का उपदेश	2	۷	33	249
वास्तव भेद की निवृत्ति का निषेघ (टी.)	3	۷	38	242
काशी आदि में मरण से मोक्ष	ą	۷	४५	२५४
वाराणसी की मुख्यता	3	۷	40	३५५
ईश्वरनृत्य-दर्शन	3	9		२५६
पुण्डरीकपुर में शिवनृत्य	3	9	Ø	२५६
शौनक को ऋग्वेद-प्रचार की शिवाज्ञा	₹	٩	२४	२५८
आश्वलायन की शिवभक्ति	3	9	२६	246
व्यासजी की उपस्थिति	3	9	3 3	249
व्याससहित मुनियों का व्याप्रपुर में व्रतानुष्टान	3	٩	3 9	२६0
मुनियों को शिवदर्शन	3	٩	४७	२६१
देवादिकृत रुद्रस्तुति (शतरुद्रिय के अनुसार)	ş	٩	५७–७२	२६२
मुक्तिखण्ड की फलश्रुति	3	٩	७५	२६४
सर्ववेदार्थ का प्रक्त ४	(पूर्व.)	9		२६५
सकल-निष्कल प्रणिधान (टी.)	8	9	9	२६५
अधिकारि-निरूपणार्थ गोत्रर्षिवर्णन	8	9	₹-90	२६५
सूत जी का प्रकट होना	8	9	9 २	२६६

versal lower transmission				
सूत की आचार्यादिस्मृति	8	9	9 ६	२६७
पर-अपर वेदार्थविभाग	8	2		२६८
परवेदार्थ	8	ą	7	२६८
अपरवेदार्थ	8	3	ą	956
माया से बंधन	8	4	Ę	२६९
माया की ज्ञानविनाश्यता	8	9	v	२६९
जीवत्व और परत्व (टी.)	8	4	ø	२६९
कल्पियस्तु का नाश	8	2	4	200
यति ज्ञान में मुख्याधिकारी	8	4	90	२७0
चतुर्विध भिक्षुओं को परंपरा से व साक्षात्				
ज्ञान	8	2	93-94	300
परोक्षब्रह्मविज्ञान का फल	8	2	9 ६	२७१
अपरोक्ष ज्ञान का फल	A	9	90	209
परमहंस के लिए प्रणवमात्र जप्य	8	3	२७	२७३
उमार्थविग्रह झिव प्रणवार्थ	8	2	39	२७३
आधिभौतिक व आध्यात्मिक काशी (हिं.)	R	2	3 8	२७३
शतरुद्रीय की महिमा (हिं.)	8	3	ąo	२७४
सत्त्वादिगुणों के कार्य	R	2	83-84	२७५
द्विविध यज्ञ : स्थूल व सूक्ष्म	8	2	86	२७६
तीन प्रकार के स्थूल यज्ञ	8	२	88	२७६
शिव ही ध्येय	8	2	48	२७६
डिाय की अन्यों से असमानता	8	ą	40	२७७
नाम का आग्रह नहीं (हिं.)	8	२	40	२७७
उत्पन्नज्ञान व्यक्ति के चिह्न	8	2	६९	206
कणाद आदि द्वारा निरूपित ज्ञान दर्शन नहीं	8	₹	۷9	269
कर्मयज्ञ का वैभव	8	3		२८२
काम्य, नित्य और नैमित्तिक विभाग	8	3	२	262
शिवपूजा दृष्टि से कर्म शीघ्र मोचक	8	3	Ę	263
ज्ञिव ही यज्ञों से पूज्य	8	₹	90	२८३

निषिद्ध कर्म से भी शिवाराधन				[15]
W.	8	3	94-90	828
महायज्ञ	8	3	9.0	264
नास्तिक मतों का भी समन्वय (हिं.)	R	3	२ 4	२८६
याचिक यज्ञ	8	8		२८७
वागुत्पत्ति	8	8	9-3	२८७
परावाक्, पश्यन्ती (टी.)	8	8	ą	266
मध्यमा	8	8	8	266
वैखरी	8	Я	4	266
अक्षरों का दिविध स्वरूप (टी.)	¥	8	۷	228
नादात्मक प्रणव	8	8	۷	269
आद्यमंत्र, मंत्रशब्दार्थ	R	8	9	२९0
प्राण से वैखरी की उत्पत्ति	8	8	99	980
प्रणव शिव का वाचक	8	8	93	299
महामंत्र और मंत्र	Я	8	98-20	292
मातृका शिव-शक्तिप्रतिपादिका	8	8	39-33	363
अपद का पदभाव	8	Я	२३	363
वैखरी सर्वोपजीव्य	૪	R	₹५—३0	२९३
त्रिविध मातृका	8	8	३२	२९४
प्रणविचार	8	4		२९६
पर प्रणय	8	4	2	२१६
अपर प्रणव	8	4	3	२९६
प्रणय येदसार	. 8	4	8-98	२१६
प्रणयवैशिष्ट्य का हेतु	8	4	94-98	286
प्रणय का सर्वायभासकत्य	R	4	90-22	296
प्रणय के ऋषि आदि	8	4	२४	266
अवयवों के ऋषि आदि	A	4	210	300,
प्रणयजप का फल	8		80-89	309
गायत्री-विवरण	¥	Ę	*	₹0२

1 .0 1				
व्याहतियाँ व उनके ऋषि आदि	8	Ę	9-4	₹0₹
गायत्री के ऋषि आदि	8	६	Ę	₹0₹
गायत्री त्रिपदा और चतुष्पदा	8	Ę	Ø	₹0₹
गायत्री का सिर	8	Ę	۷	₹0₹
देवता व विनियोग	8	ξ	٩	₹08
गायत्रीजप काल में ध्येय विराडात्मक मूर्ति	8	Ę	90-95	3()8
उक्त मूर्ति का प्रेरक शिव	R	Ę	919	₹04
मन्त्रवर्णों का देहन्यास	8	Ę	96-20	₹04
वर्णों के ध्येय रंग	8	Ę	29-26	₹() ₹
वर्णज्ञान का प्रयोजन	8	Ę	36	₹00
गायत्री मंत्र का अर्थ	Я	Ę	३१−३६	३०७
विनियोग	8	Ę	39-42	309
हंसविद्या	8	9		397
आत्ममंत्र के ऋषि आदि	R	19	9	397
जप के समय ध्यान	8	vo	ą	392
सध्यान जप का फल	R	19	A.	393
मध्यमाधिकारी के लिये जपविधि	8	O	4-6	393
उत्तमाधिकारी के लिए अनुसंधान विधान	8	19	9	393
महावाक्य का अर्थ	8	O	9 7	398
सत्त्य आदि शब्दों का बोधकत्य (टी.)	×	vo	98	394
जीव की सद् आदि रूपता	8	ø	94	395
चित् की अन्यशेषता नहीं	8	Ø	96-99	390
जीव की आनंदरूपता	8	v	30-39	396
जीव की पूर्णता	8	v	२२	396
साक्षी होने से असंसारिता	8	S	7.3	396
_साक्षात्कार का फल	8	v	२६	320
नित्यसाधनयोग	8	19	3 2	
घडशर-विवरण	8	۷	4.4	3 7 9
भुकेशर-14 भ रण		C		३२४

ऋषि आदि		5505 10		[17
- यास	8	۷	2	3 2 8
मंत्राक्षर	8	۷	A	३२५
मंत्रार्थ	8	۷	ξ-0	३२५
	8	۷	6-27	३२६
नमः शब्द का अर्थान्तर	8	۷	9 7	३२६
प्रणवार्थ	8	۷	94-96	३२७
वाच्यत्वादि अवास्तविक	8	6	90-29	326
तैर्थिकों का समन्वय (टी.)	8	۷	22	
शिव अनिषेध्य (हिं.)	8	۷		3 2 9
अविवादभूमि – शिव	8	۷	28	३२९
जपविधान	y		२५	339
विनियोग	8	۷	२७	332
पूजा			३७	ままま
रू." ध्यानयज्ञ-विवरण	8	۷	8.5	338
निरुपाधिक ध्येय नहीं	8	8		334
	8	8	9	334
असाधारण ध्येय मूर्ति	8	8	3−€	३३६
अन्य उपाधियों से विशिष्ट का ध्यान	8	9	۷	3 3 0
ध्यानमाहात्म्य	Я	8	४६	3 8 9
ध्यानजनिश्चय की निन्दा का अभिप्राय (हिं.)	8	9	४९	389
ज्ञानय ज्ञ	8	90		383
ज्ञानयज्ञशब्द का अर्थ (हिं.)	8	90	9	383
स्यरूपज्ञान	8	90	3	383
ईश्वरज्ञान	x	90	8	
जीवज्ञान	8	90		388
मुख्य-अमुख्य आत्मा	8	90	4	388
जीवरूपता का अभिव्यंजक			Ę	388
प्रमाणज्ञान आदि	8	90	G	388
	8	90	6-8	384
प्रमिति का स्वरूप	8	90	90	384

18]	8	90	90	384
प्रमा-विचार (हिं.)	8	90	99	३४६
भ्रान्ति		90	99	388
भ्रमज्ञाननिष्कर्ष (हिं.)	R	90	99	३४६
सन्देह	R			388
सन्देहज्ञान का स्वरूपविवेचन (हिं.)	R	90	99	388
निश्चय	R	90	9 २	
निश्चयज्ञान का परिष्कृतरूप (हिं.)	8	90	9 २	386
संशयादि चित्तवृत्ति कैसे ? (हिं.)	8	90	9 २	386
प्रामाण्य	R	90	93	3 8 €
भ्रम में वृत्तिद्वय (टी.)	8	90	93	380
अभावविज्ञान	R	90	94	386
अनुपलिय (हिं.)	8	90	94	380
प्रत्यक्ष, अनुमान	Я	90	9 €	386
वेदान्ताभिमत प्रत्यक्ष (हिं.)	8	90	9 ६	386
उपमिति, अर्थापत्ति	Å	90	90	386
उपमान (हिं.)	R	90	90	386
द्विविध अर्थापत्ति (हिं.)	8	90	9 10	380
शाब्दज्ञान	A	90	96	386
शाब्दी प्रमा (हिं.)	Я	90	96	38
शब्द अर्थ का निश्चायक है	8	90	96	38.
ञब्द : अक्षर, पद, वाक्य	8	90	98.	38
वाचक कौन	У	90	₹0	34
वर्णौ की वाचतकता, स्फोटवाद (हिं.)	8	90	₹0	346
वाक्यों की याचकता	8	90	29	34
ञब्द प्रकाशक है (हिं.)	8	90	₹9	341
वास्य	8	90	₹ ₹	३५
आकांक्षादि का निरूपण (हिं.)	X	90	२३	34
ब्रह्म अपदार्थ, वाक्यार्थ (हिं.)	8	90	43	34

				[19
महावाक्य, अवांतरवाक्य	x	9.0	28	343
एकवाक्यता	R	90	₹ ५	342
शब्दशक्ति (हिं.)	8	90	24	₹4२
अन्विताभिधान (हिं.)	8	90	२६	342
बाक्यार्थ की लक्ष्यमाणता (टी.)	8	90	२६	= ३५३
द्विविध तात्पर्य	8	90	२७	३५३
विधि, निषेध और सिद्धार्थबोधक वाक्य	8	90	25-28	348
सिद्धार्थबोधक का विस्तार	8	90	₹0	३५४
शिय में प्रमाणों की गति नहीं	8	90	33-38	344
ब्रह्म की सर्वप्रमाणवेद्यत्वोक्ति का तात्पर्य (टी.)	8	90	३७	३५६
स्वाभाविक बंधन असंगत	Х	90	39	३५६
भेद औपाधिक	γ	90	४२	3 4 19
उपाधिशब्द का अर्थ (हिं.)	8	90	8.3	३५७
स्वप्रकाश चिद्रूप से भेद नहीं	8	90	88	346
आत्मभेदवाद का खण्डन	A	90	४७	348
घटादि का भेद भी भ्रमसिद्ध	X	90	40-49	₹ € 0
त्रिविध सत्त्व (टी.)	Å	90	4 7	₹0
स्यरूपतः और धर्मतः भेद असिद्ध	8	90	43	3 & 9
प्राभाकर व वैशेषिक मत (टी.)	x	9 ()	43	3 & 9
स्वरूपभेद पक्ष का निराकरण (टी.)	8	90	43	359
धर्मभेदपक्ष का निराकरण	8	90	48	3 & 9
भेदनिरूपण की असंभवता	R	90	48	₹ 9
श्रुति से भेदनिषेध	8	90	44	३६२
भेद में प्रमाण का अभाव (हिं.)	٧	90	44	. 363
अभेदज्ञान का फल	8	90	48	3 5 3
आत्मयाजी को स्वाराज्यलाभ	8	90	€ 0	- ३६४
ज्ञानयज्ञयेभय	8	90	६२-७३	3 3 8
ज्ञानयज्ञ-विशेष (दृश्य की कल्पितता)	8	99		3 ६ ६

[20]				
आस्तिक्य	8	99	ą	3 5 5
देवोत्कर्षविज्ञान	8	99	99	3 & 0
जीवस्वरूप	8	99	43	369
देहभिन्न आत्मा	8	99	28	300
देहात्मवाद की प्रसिद्धता (हिं.)	8	99	28	300
स्मृति की अविद्यावृत्तिता (हिं.)	8	99	₹0	₹ 9 9
अंतःकरणचतुष्टय का स्वरूप (टी.)	8	99	₹9	302
अवस्थासाक्षी	8	99	3 9	303
ज्ञात-अज्ञातिवलक्षण	8	99	₹8	303
ज्ञानयज्ञविशेष (शिव में प्रपंचाध्यास)	8	9 2	2.853	308
निरुपाधिक शिव	8	9 २	2	308
अधिष्ठानतोपपत्ति	8	9 २	3	304
अधिष्टान-दैविध्य	8	9 २	4	304
अधिष्ठान-अध्यस्त विभाग	8	9 २	Ę	304
नियोज्य का लक्षण (टी.), कर्तृत्त्व का लक्षण (टी.)	У	9 2	99	३७६
अभाव की पदार्थान्तरता का निरास (हिं.)	8	9 3	२८	305
ज्ञानयज्ञविशेष (परशक्ति का शिवानन्यत्व)	8	93	0.2	309
परशक्ति का स्वरूप	8	93	2	0.000.000
शिवलीला का उपपादन (टी.)	8	93	2	340
शिवाऽभिन्ना शिवा	8	93	3	340
परशक्ति की ही विशेषशक्तिरूपता	8	93		3<0
शिव का पंचधाभवन (टी.)	8	93	४ ५ –६	369
रुद्रादिरूप	8	93	521 (579)	₹८9
सदाशिय, ईश्यर	8	93	9-0	3 ८ २
हिरण्यगर्भ, सूत्रात्मा	8		90-99	3 4 9
विराद्; स्वराट्, सम्राट्	8	93	92-93	363
शक्ति का अद्वैत		93	98-98	\$ 2 \$
शिव-शिवा का अभेद	8	9 3	38	३८६
ाराचाराचा परा भागप	Å	93	₹0	३८६

				[21]
पार्वती ब्रह्मविद्या-प्रदायिनी	8	93	38	360
यही सर्वाराध्या	8	93	३६	८७
परिपूर्णशिवदर्शन	8	9 3	४२	325
योगी की स्वच्छन्दता	8	9.3	४७	366
ज्ञानयज्ञविशेष (पंचब्रह्म)	8	98		₹90
निर्विकार शिव	8	98	- 2	₹90
पाँच प्रकार से अवस्थित शिव	8	98	3− 8	399
शब्दादि की ईशानादिरूपता	8	98		
श्रोत्रादि के अध्यात्मादिभेद (टी.)	8	98	. 4	₹९9
पैर आदि की ईशानादिता			9 २	385
मन आदि पंचब्रह्मरूप	8	98	98	₹ ९ ३
	8	98	96	₹ 9 ₹
पंचप्राण के प्रातिस्थिक देवता	8	98	23	368
निवृत्ति आदि कलाओं की पंचब्रह्मरूपता	8	98	२६-२७	\$68
निवृत्ति आदि कलाओं का स्वरूप (टी.)	8	98	२६—२७	368
'दासोऽहम्' आदि भ्रम	8	98	QΕ	३९६
विवेक प्रदीप	8	98	₹ % -80	390
ज्ञानशस्त्र	8	98	४२	₹9७
परमेक्यर ही कारण (टी.)	8	98	88	₹ ९७
प्रपंच का सदा शिव से अभेद (हिं.)	8	98	४५	385
अज्ञातात्मा ही अज्ञान (हिं.)	8	98	४६	399
जीवन्मुक्त (हिं.)	8	98	40	399
शिवकृपा से ज्ञान	Х	98	५३	800
मनःशुद्धि के अनुसार देवप्रसाद	8	98	45-40	800
श्रवणादि का स्वरूप (टी.)	A	98	40	809
शिवप्रसाद से ही सर्वप्राप्ति	8	98	49-50	809
ज्ञानिवशेषयोग	8	94		803
सत्ता-विचार	8	94	2	803

2]				
सत्ताजित का निषेध	8	94	3-x	8(
सत्ता व घटादि का भेदादि असंगत	8	94	4	8(
सत्ताप्रतीति भ्रम है	8	94	4	8(
ब्रह्म ही सत्ता है	8	94	۷	8(
सत्ताशब्दार्थ (हिं.)	8	94	۷	8(
अव्यावृत्त अननुगत वस्तु (टी.)	8	94	۷	8(
कार्य की कारणात्मकता	8	94	9 २	8(
निरवयव की विरुद्धार्थों के प्रति अधिष्टानता	8	94	9 %	8(
शंभु की सर्वरूपता	8	94	96	8(
सर्वत्र शिवदर्शन का फल	8	94	२ २	8(
ज्ञान से कर्मनिवृत्ति (टी.)	8	94	28	8(
बाधसामानाधिकरण्य	8	94	२७	8(
यस्तुतः बाध्य नहीं	8	94	२९−३O	8
मोक्ष निरतिशय (टी.)	8	94	₹9	81
ज्ञानोत्पत्ति के कारण	8	9 ६		8
देवता-प्रार्थना	8	9 ६	ą	8
ब्रह्मचारी आदि के लिये होम	8	9 ६	90	8
गुरुसे या	R	9 ६	93	81
वेदान्तश्रवण	8	9 ६	93	8
लिंगार्च न	8	9 ६	98	8
दन्द सहिष्णुता	8	9 Ę	94	8
रुद्राक्षधारण	8	9 ६	9 ६	8
षडक्षरजप	8	9 ६	90-96	8
नीचों से असम्पर्क	8	9 ६	98	8
भस्म	8	9 ६	3.9	8
उत्सव सेवा	8	9 ६	२५	8
ड्रावनिर्माल्य-ग्राह्मता का निर्णय (हिं.)	8	9 %	२६	8
गन्धपुष्पादि की अग्राह्यता (टी.)	8	9 Ę	२६	8
				u

गुरूच्छिष्ट की पवित्रता	8	9 ६	5.4	[23
लांछन-निषेध	8		٦ ٧	898
भस्म का स्वरूप	8	9 €	39-33	838
ज्ञात का ज्ञान, मुक्त की मुक्ति		9 ६	36	४१५
वैसम्य	8	9 Ę	४६	४१६
शोभन-अशोभनाध्यास से इच्छा-जिहीर्षा	8	90		४१७
देहादि की जुगुप्सितता	8	90	₹	896
गर्भादिदुःख	8	90	9.8	899
बाल्यदुःख	8	90	४५	853
2	8	90	43	४२४
यौबनदुःख	R	90	40	४२५
देह में 'मैं-मेरा' निरुचय होने से सारा दुःख	8	90	६९	856
सुखेच्छा भ्रम से	R	90	٥٥	856
विरक्त को ही ज्ञानप्राप्ति	8	90	૭ ર.	830
अनित्यवस्तु विचार	8	96		8.3 ()
अनात्मा जड अनित्य	8	96	2	४३१
अकार्य भी अनित्य	8	96	3	839
अनित्यत्वं में अनात्मत्व हेतु की परीक्षा (टी.)	8	96	3-8	839
भाववस्तु के लिये पृथक् नियम मानना व्यर्थ	8	96	4-5	839
तर्क प्रमाण का अनुग्राहक	8	96	O	835
श्रुप्ति का निरेपक्ष प्रामाण्य (हिं.)	8	96	۷	४३२
ब्रह्म प्रमाणान्तर का अविषय	8	96	9	833
श्रुत्यनुकूल प्रमाणान्तरों की विषयता स्वीकार्य				
(ff.)	٧	96	9	४३२
शब्द की निरपेक्षता का उपपादन (टी.)	8	96		833
अप्रामाणिक तर्क की अनर्थहेतुता का आख्यान	8	96	99	833
तर्क की अप्रतिष्टा	8	96	94	833
षडक्षरमहिमा	٧	96	२७	830
यम द्वारा परिहरणीय लोग	8	96	34-80	8.3 €
यम द्वारा हन्तव्य लोग	8	96	86-48	836

1	¥	96	ξ¥	836
हेतुक महापापी है	8	96	६६	88(
वैराग्यजनक				
अनित्यत्यज्ञान आवश्यकः न कि असत्यत्यज्ञान			ξĘ	88(
(f ë.)	8	96	2.0	889
वैराग्य का लक्षण (हिं.)	8	96	ĘO	88(
राग से ही दुःख	8	96	ĘĆ	
अनित्यत्व का विस्तार	8	96	00	88(
परलोक का अनित्यत्व	8	96	७५	889
भूतविलय	8	96	७६	88
ब्रह्मा आदि की अनित्यता	8	96	05	885
परमेक्चर ही नित्य	8	96	८२	883
नित्यवस्तुविचार	8	99		883
नित्यवस्तु का स्वरूप	Я	98	2	888
चित् अनित्य नहीं	8	99	3	883
'मैं नहीं था या रहूँगा' का विश्लेषण (हिं	٧ (.	98	3	883
ज्ञान की नित्यता	8	99	8	880
ज्ञान की अनित्यता प्रतीति का उपपादन (ति	š.) v	99	8	880
'प्रत्यय' ज्ञब्द का अर्थ	8	98	Ę	888
ज्ञप्तिमात्र का यिनाश नहीं	8	98	۷	888
ज्ञान की अभिव्यक्ति का तात्पर्य (हिं.)	X	99	99	880
साक्षी	8	98	92-24	886
विशिष्ट धर्म	8	30		849
विविध धर्म	8	30	93	843
म्लेच्छादि-मतसमन्वय (हिं.)	8	30	9 Ę	843
वैष्णवों से शैवों की श्रेष्टता का आधार (हिं.)४	30	₹0	841
सर्वश्रेष्ठ धर्म : ज्ञान	8	₹0	२७	841
शिवज्ञान ही बास्तविक ज्ञान है	8	₹0	₹9	841
श्रौतधर्म ही वास्तविक धर्म है	8	₹0	. 32	
वेदमहत्ता	8			841
500 17 000	1000	₹0	38	84

संक्षिप्त उपदेश	×	30	944 4 0	[25]
मुक्तिसाधन	8	२ 0	४२	४५७
साधनविषयक ईञ्चरोपदेश	8		0.14	849
साधन की गुप्तता (हिं.)	8	२१ २१	98 98	840
भिक्षुधर्म	8	39		४६0
श्रवणादि के लक्षण (टी.)	8	२ 9	२३ २५—२६	४६२ ४६२
देवताओं व मुनियों की एकवाक्यता	8	29	₹५-₹६	
मार्गी की प्रामाणिकता	8	22	40-47	868
शंकर ही सर्वशास्त्रनिर्माता	8	22	3	354
शिवनिर्मित शास्त्रों के ही विष्णु आदि		13	२—६	४६५
व्याख्याता हैं		2.2		we e
	, a	22	۶–۷	४६६
समन्वय और तारतम्य (हिं.)	8	22	9	४६६
सब मार्ग शिवप्राप्ति के	8	२२	90	४६६
उत्कृष्ट मार्ग की प्राप्ति शिवकृपा से	8	22	99-92	४६७
औपनिषद ज्ञान ही विद्या	8	२२	94-90	४६८
अन्य मार्ग क्रम से प्रमाण	R	२२	96-38	866
वैदिक अन्य मार्ग पर न चले	8	२२	₹ 9	886
वादों के मतभेद (टी.)	8	२ २	33-58	800
मार्गान्तरों का प्रयोजन	8	२ २	२६	800
शंकरप्रसाद	.8	₹ ₹		४७१
साधनाक्रम	8	२३	9	803
अप्रमाद आवश्यक	8	२ ३	9 ६	४७४
प्रणवश्रेष्ट्य	8	₹ ₹	90	808
विभिन्न देवताओं की कृपा से विभिन्न फल	8	२३	20-24	४७४
महादेवप्रसाद स्वयं समर्थ	8	23	20-26	४७५
सब मुक्त होते हैं	8	93	₹9-₹€	४७५
प्रसादमाहात्स्य	8	. २३	₹७-४0	४७६
शिवप्रसाद के विना भोग-मोक्ष असंभव	8	२३	४७	४७७
शिवप्रसाद से शिवप्रसाद	8	23	40	४७८
100 CONTRACTOR 100 CO				

93% 4 7				
प्रसादवैभव	8	२४		802
दुर्घट शूद्र की कथा	8	28	ą	४७८
व्याघ्रपुरमहत्ता	8	२४	90	४७९
शूद्र का पंचाक्षर में अधिकारविचार (टी.)	8	28	22	860
प्रसादवैभव	8	રવ	2000000	869
सत्यसन्ध की कथा	8	રષ	2	865
विष्णुस्तुति	8	२५	90-38	४८२
परमेश्वर का विष्णु से अतिशय	8	२ ५	38-86	864
महादेव समाख्या का सार्थक्य	٧	२५	49	860
शिवभक्ति विचार	8	२६	5 4.4	866
नाना भक्तियाँ	8	24	२—३३	866
शिव की साक्षाद् भक्ति	8	२६	38	863
वेदान्तज्ञों द्वारा प्रोक्त भक्ति	8	२६	30	863
परम पद का स्वरूप	8	२७	, ,	
परिशवस्यरूप	8	२७	9	868
सच्चिदानन्दमय संसार (हिं.)	8	२७	· 7	868
उत्कर्ष परम्परा	8	२७		868
समष्टि-व्यष्टि ज्ञब्दों का अर्थ (हिं.)	8	20	3	866
विभूतियों में वैशिष्ट्य	8			४९५
नानादेववाद श्रौत-स्मार्त नहीं (हिं.)	8	20	Ę	४९६
परतत्त्व		20	۷	890
आनंदमीमांसा	8	₹ ♥	٩	890
भूमानन्द	R	२७	90-99	860
4 ** ** ** ** ** ** ** ** ** ** ** ** **	8	२७	93	896
विशेषण, उपाधि, उपलक्षण (हिं.)	8	30	93	896
रुद्रादि भेद से एक शिव स्थित हैं	8	२७	98	४९८
देवविभाग व्यावहारिक	8	२७	96	866
शिव ही ध्येय	R	२७	२३	400
निर्विकल्प ज्ञान से मोक्ष	8	२७	24	400

				[27
शिव के नाम-रूप नहीं	8	२७	26	409
परतत्त्व के विशिष्ट नाम	8	२७	२९	409
अन्य नाम गौण	8	२७	₹ 0	409
मुख्य मूर्ति	8	२७	39	409
रुद्र से परनामों का सम्बन्ध	8	२७	38-36	403
शिवलिंग का स्वरूप	8	26		408
न्निय ही लिंग हैं	8	२८	3	408
लिंगशब्द शिवमूर्ति में रूढ (हिं.)	8	२८	7	408
शिव की अस्वप्रकाशता असंभव	8	26	3− 8	408
स्वप्रकाशत्य-निर्वचन (हिं.)	8	26	4	408
जून्यनि राकृति	8	26	Ę	404
वृत्तिव्याप्ति का स्वीकार (टी.)	x	२८	9	408
'शिव का लिंग' इस व्युत्पत्ति की परीक्षा	8	26	90-93	५०६
बहुविध लिंग	R	26	98-99	५०७
ज्ञान ही लिंग	8	26	3.0	404
'आलय (मूर्ति आदि) लिंग है' इसका विचार	8	26	29	409
चेतन सदा सत्त्य	8	36	23	408
जड की असत्यता	8	26	28-24	490
क्षिय किसी पर आधारित नहीं	8	26	२६	490
वेदप्रामाण्य (टी.)	8	26	25	499
बाणिलंगादि का उपयोग	8	26	₹ 0	499
लिंगशब्द की ब्युत्पत्ति	8	२८	3 2	५१२
सत्य का अविलय	8	26	38	497
शरीर में लिंग	У	26	३६	497
ज्ञान ही शिवार्चन	8	२८	४९	498
शिवस्थान	8	28		498
मातृकाक्षरस्तोत्र	8	२ ९	७–६५	490
अक्षरग्रहण की सार्थकता (टी.)	8	२ ९	· ·	490

1				
औकारमाहात्म्य (टी.)	x	. २९	. 30	420
बिन्दु-बीज	R	38	29	429
विसर्गार्थ (टी.)	8	38		429
अहित संग्रह (टी.)	8	28	. २९	422
शिव ही यथार्थ	8	२९	86	434
ध्वनि—स्फोट (टी.)	8	38	ξ0	426
उपासना में आयृत्ति अलंकार (टी.)	8	28	Ę¥	429
अध्यात्म शिवस्थान	R	38	ও ৭	430
अधिभूत ज्ञिवस्थान	8	56	७९	439
पुण्डरीकपुर का माहात्म्य	8	28	69-903	५३२
भस्मधारण-वैभव	8	₹0	1,000	५३५
महाभस्म	8	₹0	3	५३६
महाभस्मज्ञाता का माहात्म्य	8	₹0	4-97	५३६
स्वल्पभस्म	8	₹ 0	93	436
तत्तदंग के लिए मंत्र (टी.)	8	₹0	93-98	436
भस्मनिर्माण (टी.)	8	₹0	93-98	५३८
भस्म सद्राग्निका वीर्य (टी.)	8	₹0	93-98	५३८
भस्मस्नानफल (टी.)	8	₹0	93-98	५३८
अधिकारिभेद से भस्मभेद	8	₹0	94-90	५३९
धूलनार्थ मंत्र	8	₹0	96	439
त्रिपुण्ड्रार्थ मंत्र	8	3 O	98	439
त्रिपुण्ड्रधारण-वैशिष्ट्य (टी.)	R	₹0	98	५३९
आश्रमभेद से मंत्रभेद	8	₹0	₹0 - ₹४	480
उद्घूलन व त्रिपुण्ड्र ज्ञान का अंग	8	₹0	२५	480
कालाग्निरुद्रोपनिषत् में भरमप्राप्य सिद्धियाँ (टी.)	8	3 O	3.3	५४२
उद्भूलन व त्रिपुण्ड्रधारण के फल व प्रयोजन	8	3 O	₹ ४ —५0	487
भस्म न धारण करने की निंदा	8	₹0	49-49	484
भरमप्रशंसा	8	₹0	ξ0-ξ2	५४६

	6001			[29]
जीवब्रह्मेक्यनिरूपण (शिवप्रीतिकरनिरूपण)	R	₹9	121 22	५४७
शिय को प्रिय	8	₹ 9	२ —२२	480
ञ् श्रूषामाहात्म्य का आख्यान	8	₹ 9	₹3—₹9	489
भक्ति न होने के कारण	8	३२		440
गौतमकथा	8	3 2	3	440
गौतम का शाप	8	३२	36-88	449
परतत्त्वनाम	x	3 3		448
शिव आदि नाम	8	3 3	2-24	५५५
अहिर्बुध्न्य का निरुक्त (टी.)	8	33	9	५५६
पुनरुक्त नामों का तात्पर्य (टी.)	8	३ ३	२६	4 ६ 0
निंदा का अभिप्राय (हिं.)	8	3 3	33	५६१
महादेव के प्रसाद के कारण	8	3 &		५६२
सम्प्रदाय ञब्दार्थ (हिं.)	8	38	9	५६२
शिष्यगुण	8	38	2	५६२
आचार्यगुण	8	3 &	3	५६२
गुरूपसत्ति	A	₹ 8	8-6	५६३
दीक्षा	8	, 3 A	S	५६३
ग्रन्थिच्छेदन (टी.)	8	38	98	५६४
शक्तिपात	8	₹8	9 ६ — 9 ७	५६५
कर्मसाम्य अपेक्षित	8	₹8	₹ 0	५६५
बिना शक्तिपात के भी मोक्ष संभव	8	38	२५	५६६
शक्तिपात का रहस्यांश (टी.)	8	38	२७	५६७
सम्प्रदायपरंपरा	8	34		452
आदिगुरु	R	34	2	५६८
सम्प्रदाय न जानने की निंदा	8	३५	4-90	५६९
नमस्कार्य	8	ą 4	92-93	५६९
मूर्खशिष्य को उपदेश न दे	8	३ ५	9 ६	400
परंपराबोध ज्ञान का उपकारक	8	३५	23	400

00]				
सद्यः मुक्ति देने वाले क्षेत्र की महिमा	¥	3 &		५७२
शिव में प्रपंचविलय (टी.)	8	३६	4	५७३
दक्षिणकेलास	٧	३६	90	408
संवत्सरव्रत	8	3 5	94	५७५
मुक्ति के उपाय	¥	ąю		460
जैमिनी का प्रइन	8	30	4	440
व्यास का उत्तर	8	३७	Ę	460
व्याघ्रपुर	8	30	90	429
दक्षिण कैलास, वृद्धाचलादि नाना स्थान	8	३७	93	469
हालास्य-माहात्म्य की कथा	X	₹७	96	462
मुक्तिसाधन	¥	36		468
परमेश्यरस्तोत्र	Я	3.5	५—६९	428
द्विविध सामानाधिकरण्य (टी.)	х	36	Ę	424
मोक्ष नित्यप्राप्त	8	36	७६	497
प्राप्य मोक्ष की परीक्षा	8	36	69	493
अभाव की असाध्यता	٧	36	43	493
ध्यंस नित्य नहीं	x	36	99	494
अचेतनत्व अनित्यता का प्रयोजक	8	3 &	95-90	५९६
ज्ञान-कर्म का समुच्चय असंभव	Я	36	99-900	५९६
ज्ञानी का कर्म में अनिधकार (हिं.)	X	5€	900	490
सारूप्यादि का साधन कर्म	X	3.6	909	490
नारितक्यनिषेध	8	34	904	492
वेदों का अविरोध	8	38		499
अनुभव आवश्यकत्व, समन्वय अनिवार्य (हिं.)	8	₹9	9	499
वेद में विषयभेद	8	38	२−३	£00
द्वेत अध्यस्त	8	38	४–६	ξO0
अद्वैत अनध्यस्त	8	3 9	9-90	£09
ज्ञून्य अधिष्ठान नहीं (हिं.)	8	₹ 9	99	407
Water Commencer Many Water		HARRIOT 12	-0.00 Mil.	401

S)				[3
ब्रत्यक्षादि के अधिषय में श्रुति प्रमाण	8	38	94	ξ ()
श्रुति को प्रमाणान्तर-संवाद नहीं चाहिये	R	3 9	910	Ę ()
प्रयोजनवश प्रामाण्य	x	39	₹0-₹9	§ 0
अज्ञाननिवृत्ति द्वारा अद्वयबोधन	x	39	28	Ę ()
विधिमुख से बोधन	R	3 9	२ ५	ξ()
शक्ति से अविषयता (हिं.)	8	39	24	ξ0
महायाक्य प्रवृत्ति	8	38	२६	ξ0
जीवत्व अस्वाभाविक	8	39	२७-२८	ξ ()
मणि आदि केवल प्रतिबंधक, नाशक नहीं	8	3 9	3.3	ξ()
रसवीर्य से वास्तविक स्वर्णता नहीं	8	3 9	36-36	Ę ()
साम्य ही मोक्ष है इस वाद की परीक्षा	8	39	४६	ξ 9
सकार्य अज्ञान का ग्रसन	x	3 9	49	ξ 9
मोक्ष में जगत् का अभाव-इस का समीक्षण	8	3 9	५४–५६	Ę 9
भावाद्वेत अस्वीकृत (हिं.)	8	39	५६	§ 9
एकत्वबोधक वाक्य शेषी	8	39	ξO	5 9
ब्रह्मकाण्ड कर्मशेष नहीं	8	39	19 9	ξ 9
श्रुतिलिंगादिवशात् भी ब्रह्मज्ञान कर्मांग नहीं (हिं	*.)×	₹ 9	७५	5,9
अधिकारिभेदवश भी समुच्चय नहीं	8	3 9	৩৩	Ę 9
विवरणानुसार समुच्चयनिरास (हिं.)	x	39	۷۵	ξ 9
कर्मभाग भी ब्रह्मकाण्ड का साक्षात् शेष नहीं	8	38	۷9	8,9
श्रवणादि करण हैं	8	3 9	٤٤-८३	ξ 9
ज्ञान को इतरानपेक्षा	8	₹ ९	43-68	§ 9
कर्म का उपकारक्रम	8	3 9	44	६२
सर्वसिद्धि करने वाले धर्म	8	80		६२
त्रिविष कर्म	8	80	2	६२
कायिक सर्वसिद्धिप्रद कर्म	R	80	३—५	5 ?
वाचिक तथाविध कर्म	8	80	६ −७	६२
मानस तथाविष कर्म	8	80	6-99	६ २:

,c 1				
उक्त कर्मों की महत्ता	8	80	96	६२४
पातकविचार	8	89		६२५
दस पातक (महापातकादि)	8	89	३ —५	६२५
महापातक	8	89	६ —७	६२५
अतिपातक	8	89	8-5	६२५
मातार्थे (हिं.)	¥	89	9	६२५
प्रासंगिक पाप	X	89	90-93	६२६
पातक	8	89	93-98	६२६
उपपातक (मुख्य)	У	89	90-20	६२६
उपपातक (गौण)	8	89	२१–२७	६२७
जातिभ्रंशकर पाप	8	89	25-29	६२७
संकीर्णकरण	8	89	₹ 0	६२७
अपात्रीकरण	8	89	₹9	६२७
मलावह	¥	89	3 3	६२७
प्रकीर्ण	8	89	3 3	६२८
क्षत्रियादि के विशेष पाप	8	89	38-38	६२८
प्रायिक्चित्त	8	82		६२९
वेदांतज्ञान सब पापों का दाहक	8	83	2	६२९
ज्ञानी को कर्म बंधन नहीं—इसकी उपपत्ति				
(1 .)	8	४२	3	६२९
साक्षिरूप आत्मा का कर्मसंबंध नहीं	У	४२	8-26	₹३()
देहादि में अहंधी वाले का ही कर्मसंबंध	8	8.5	₹₹	६३५
परोक्ष-अपरोक्ष ज्ञानों का फल	Х	४२	₹4-₹	६३६
ब्रह्मभावना भी प्रायश्चित	8	83	۸0	६३७
प्रायिक्चित्तार्थ मूर्तिध्यान	8	४२	83-49	६३७
प्रायश्चित्तात्मक जप	8	४२	42-04	\$ \$4
प्राणायाम से प्रायश्चित	8	83	७६	£8()
प्रातः उठकर 'महादेव' कहने से प्रायश्चित्त	8	83	७९	
ब्राह्ममुहूर्त में शिवकीर्तन से प्रायश्चित	8	82	۷0	६४१
AND THE PARTY OF THE PROPERTY OF THE PARTY O		- 13	-0	६४१

पाँच पुण्यों का प्रातः कीर्तन करने से प्रायश्चित ४ ४२ ८१-८२ ब्राह्मण भोजन से प्रायश्चित ४ ४२ ८५-८२ शिवपूजन से प्रायश्चित ४ ४२ ९०-९३ काशी में गंगारनान, विश्वनाधदर्शन से प्रायश्चित ४ ४२ ९४ गोदावरी आदि में स्नान से प्रायश्चित ४ ४२ ९५-१०० दश्रसभापति के दर्शन से प्रायश्चित ४ ४२ १००१ प्रायश्चितात्मक संन्यास ४ ४२ १००१ प्रापशुद्धि के उपाय ४ ४३ शिवस्थान ४ ४३ २-८२	689 689
ब्राह्मण भोजन से प्रायिवत्त ४ ४२ ८५-८९ शिवपूजन से प्रायिवत्त ४ ४२ ९०-९३ काशी में गंगारनान, विश्वनाथदर्शन से प्रायिवत्त ४ ४२ ९४ गोदावरी आदि में स्नान से प्रायिवत्त ४ ४२ ९५-१०० दभ्रसभापति के दर्शन से प्रायिवत्त ४ ४२ १०१ प्रायश्चित्तात्मक संन्यास ४ ४२ १०२ पापशुद्धि के उपाय ४ ४३ २-८२	E 89
हित्रवपूजन से प्रायदिचत ४ ४२ ९०-९३ काज्ञी में गंगारनान, विज्ञ्यनाथदर्शन से प्रायदिचत ४ ४२ ९४ गोदावरी आदि में स्नान से प्रायदिचत ४ ४२ ९५-१०० दभ्रसभापति के दर्शन से प्रायदिचत ४ ४२ १०१ प्रायदिचतात्मक संन्यास ४ ४२ १०२ पापजुद्धि के उपाय ४ ४३ २-८२	
काशी में गंगास्तान, विश्वनाथदर्शन से प्रायश्चित्त ४ ४२ ९४ गोदावरी आदि में स्नान से प्रायश्चित ४ ४२ ९५-१०० दभ्रसभापति के दर्शन से प्रायश्चित्त ४ ४२ १०१ प्रायश्चित्तात्मक संन्यास ४ ४२ १०२ पापशुद्धि के उपाय ४ ४३ २-८२	६४२
प्रायश्चित ४ ४२ ९४ गोदावरी आदि में स्नान से प्रायश्चित ४ ४२ ९५-१०० दभ्रसभापति के दर्शन से प्रायश्चित ४ ४२ १०१ प्रायश्चित्तात्मक संन्यास ४ ४२ १०२ पापशुद्धि के उपाय ४ ४३ २-८२	
गोदाबरी आदि में स्नान से प्रायश्चित ४ ४२ ९५-१०० दभ्रसभापति के दर्शन से प्रायश्चित ४ ४२ १०१ १०१ प्रायश्चितत्तात्मक संन्यास ४ ४२ १०२ पापशुद्धि के उपाय ४ ४३ २-८२	
दभ्रसभापति के दर्शन से प्रायिश्वत ४ ४२ 909 प्रायश्वितात्मक संन्यास ४ ४२ 90२ पापशुद्धि के उपाय ४ ४३ २-८२	६४२
प्रायश्चित्तात्मक संन्यास ४ ४२ १०२ पापशुद्धि के उपाय ४ ४३ शिवस्थान ४ ४३ २-८२	६४२
पापशुद्धि के उपाय ४ ४३ शिवस्थान ४ ४३ २-८२	६४३
शिवस्थान ४ ४३ २-८२	६४३
100 Table 100 Ta	६४५
RELITED RESIDENCE	६४५
व्याप्रपुर, शिवगंगा ४ ४३ ८३-१०७	६५४
द्रव्यशुद्धि ४ ४४	६५७
दो द्रव्य – आत्मा, अनात्मा ४ ४४ २	६५८
सत्ता निर्दुष्ट ४ ४४ ३-५	६५८
ज्ञान भी दुष्ट नहीं ४ ४४ ५	६५८
जड में ही दोष ४ ४४ ६	६५९
ज्ञान की सदोषता औपाधिक ४ ४४ ९	ξξ()
आनंद भी निर्दुष्ट ४ ४४ १०-१३	ξξ()
मुख आत्मरूप ४ ४४ १४–१५	६६ 0
आत्मा शुद्ध ४ ४४ १६	E E 9
आत्मा की औपाधिक अशुद्धि ४ ४४ १७	६६ 9
अञ्चुद्धि-निवृत्ति ४ ४४ १७–२१	६६१
परा-अपरा शुद्धि ४ ४४ २२	६६२
द्विविध अनात्मा ४ ४४ २४	६६२
देहशुद्धि ४ ४४ २६	६६३
इन्द्रियशुद्धि ४ ४४ २७	६६३
प्राणशुद्धि ४ ४४ २८	६६३
मनःशुद्धि ४ ४४ २९	६६३
व्यावहारिक शुद्धि ४ ४४ ३०	६६३

12000	14217
34	1
•	

77 1				
ब्रह्मभावना से शुद्धि	8	88	३२	६६४
वर्तन आदि की शुद्धि	8	88	₹ 0	६६५
शौच-आचरण के लिए स्मर्तव्य नियम	8	88	85-83	६६६
अन्न आदि की शुद्धि	8	88	8.3	६६६
वस्त्रादि की शुद्धि	8	४४	86	६६६
द्रव वस्तुओं की शुद्धि	8	88	49	६६७
तैजस आदि पात्रों की शुद्धि	8	88	५७	६६७
स्पर्शदोष कहाँ नहीं	8	88	६ 9	६६८
सर्वदोषनिवर्तक ब्रह्मदृष्टि	8	88	& 8- & &	६६८
कारणाऽभेद विचार से शुद्धि	8	88	६७	६६९
अभक्ष्य से निवृत्ति	8	४५		€00
, आहारशुद्धि से शिवज्ञान	R	४५	2	ξ છ ()
ग्रन्थियाँ (टी.)	x	४५	3	€ 00 0
अभक्ष्यभक्षण से भ्रमज्ञान	x	84	X	₹७0
अज्ञानी के लिए ही अभक्ष्य	8	४५	ø	६७१
ज्ञानी के लिए सारा जगत् भोज्य	8	84	9 O	६७१
जगत् भोज्य और भक्षित	8	84	99	६७२
जगत् का भक्षण और सर्जन	8	४५	93	६७२
सुषुप्ति में सर्वविलय का अर्थ (हिं.)	8	84	9 ₹	६७२
स्वस्वरूप का स्वयं भोग	8	४५	94	६७३
ब्रह्मातिरिक्त सत्ता नहीं	8	84	9 ६	६७३
माया अविचारितरूपिणी	8	४५	96	६७३
बाधित माया की प्रतीति	8	84	₹0	६७४
अखाद्य	¥	४५	२४	६७४
वेदबाह्य द्वारा स्पृष्ट खाने योग्य नहीं	8	84	38	६७५
पंचनख	8	84	89	६७६
——— मांस न स्वाना ही स्मृतियों का अभिप्राय	(हिं.)४	४५	89	६७६
क्षत्रियादि भी अभक्ष्य वर्जन करें	8	84	88	ୡ୕ଌଌ
Present consistent - ACCOL LINEAR SALVANT - CLASSICAL INCOME.			6200.71	10000000

अटारह विद्यार्थे	06/82			[3
	8	84	५३	६७८
मृत्यु के सूचक	8	४६		६७९
अरिष्टों की उपादेयता (टी.)	8	४६	9	६७९
नाना अरिष्ट	8	४६	२—३ ५	६७९
अरिष्ट ज्ञात होने पर कर्तव्य	8	४६	36-48	६८ ३
व्याप्रपुरगमन	R	४६	५५–६६	६८३
पापफल	X	80		ĘCE
ब्रह्महत्यादि के फल	8	४७	2-26	ĘZĘ
अज्ञान से बंधन	8	४७	28	Ę 2 9
देहादि की दृश्यता	8	४७	₹9—३२	६८९
द्रष्टा कभी दृश्य नहीं	8	४७	33-36	६ ९(
जड स्वप्रकाश नहीं	8	४७	39	६९९
जड-चेतन का वास्तविक संबंध नहीं (टी.)	8	४७	80	६९३
वेतन की अदृश्यता	8	80	89	६९२
वेतन का नित्य भान	8	४७	85-83	६९२
वृत्तिज्ञान से नित्यभान का भेद	8	80	88	६९३
स्वप्रकाशता	8	80	४५	६९३
ज्ञाततानिरास (टी.)	Х	४७	४५	६९३
<u>दृग्रूप का कर्म से सम्बन्ध नहीं</u>	8	80	80-49	६९४
भ्रम से ही अधिकार व बंधन	8	80	42-48	६९५
कर्मबन्धन से निवृत्ति	x	80	44	६९५
पराञ्चक्ति की स्तुति	8	80	49-49	६९६
स्तोत्र की फलश्रुति	8	४७	©()	६९७
ब्रह्मगीता	४ उत्तर	9-93		६९९
ब्रह्मगीति	ब्र	9		٥ <u>0</u> 0
ब्रह्मपुर का वर्णन	ब्र	9	۷-۹۷	000
ब्रह्मा का वर्णन	ब्र	9	38-38	909
देवकृत ब्रह्मस्तोत्र	ब्र	9	39-46	७ 0२

वेदार्थ-विचार	व्र	2		908
अवाच्य में शास्त्रप्रवृत्ति (हिं.)	я я	3	9	७0४
सृष्टि के पूर्व केवल शिव (ऐतरेयक का	х			
विस्तार)	ब्र	2	ą	80x
आत्मशब्दार्थ (टी.)	ब	2	2	008
ईक्षण	ब्र	3	3	008
सृष्टि	ब्र	9	8	७0५
आत्मगृहीति अधिकरण का संक्षेप (टी.)	ब्र	2	Х	७०५
जगत्कारणविषयक मतभेद	ब्र	2	4-90	७०५
जून्य की कारणता कहने का अभिप्राय (हिं.)	व्र	2	۷	७०६
द्विविध परमार्थ	ब्र	2	90	000
व्यावहारिक-प्रातिभासिक विभाजन	ब्र	2	98-20	500
वेदार्थ	ब्र	२	२9	500
मार्गान्तर प्रातिभासिकबोधक	ब्र	3	22	७०८
दृष्टिभेद से सत्त्यत्वभेद	ब्र	2	24-20	500
मिथ्या की सत्योपायता	ब्र	2	25-56	() e
वैदिक के लिये मार्गान्तर हेय	ब्र .	2	₹0	009
पाखण्डी	ब्र	2	34-49	008
साक्षी शिव का स्वरूप	ब्र	3		999
ऐतरेयकार्थनिरूपण	ब्र	3	9-30	७११
क्रियाशक्ति व चिच्छक्तिरूप से प्रवेश (टी.)	ब्र	3	9	699
स्वतःभान साक्ष्य का नहीं	ब्र.	3	3	७१२
जन्य भान मानने वाले पक्ष की समीक्षा	ब्र.	3	₹-90	७१२
भान नित्य	ब्र.	ą	99	७१३
भान साक्षिरूप है	ब्र	3	9 2	৩ 9 ३
परोक्षस्थल में विषय-ज्ञानसम्बन्ध (हिं.)	ब्र.	3	9 &	७१४
अनुगत चित्प्रकाश साक्षी है (टी.)	ब्र.	3	96	७१५
निञ्चय-निर्धारण (हिं.)	ब्र.	3	99	696
संज्ञान-निरूपण (हिं.)	ब्र.	3	₹0	७१६

त्पृति, मति, बुद्धि, प्रज्ञा (टी.)	ब्र.	ą	188	1
शिव सर्वात्मा	ब्र.		29	199
प्रज्ञा ही प्रतिष्टा है		ą	₹4	७१
'प्रज्ञानं ब्रह्म' का स्पष्टार्थ (टी.)	ब्र.	ş	२८	9
ज्ञान से मोक्ष	ब्र	ą	26	199
तैत्तिरीयोपनिषद्वियरण	ब्र.	3	28	19 9
	ब्र.	ş	39-996	19 9
व्याख्येय श्रुतिसंग्रह (टी.)	萬.	3	₹9	9
स्यरूपलक्षण का साधन (टी.)	ब्र.	3	₹9	109
गुहाशब्दार्थ (टी.)	ब्र.	3	₹9	৩ ২
ब्रह्मज्ञान का फल	ब्र.	3	37-33	७२
'सह' और 'विपश्चिता' का अभिप्राय (टी.)	ब्र.	3	3 ₹	७२
ब्रह्म से सृष्टि	a .	3	38	0
अज्ञातात्मा से अतिरिक्त अज्ञान नहीं (हिं.)	可.	3	38	0
अभिन्ननिमित्तोपादान (टी.)	ब्र	3	3 &	95
विवर्तवाद (टी.)	ब्र.	3	38	0
ब्रह्म से ही वायु आदि की उत्पत्ति (टी.)	ब्र.	3	34	09
प्रजापतिकर्तृक भौतिक सर्ग (टी.)	ब्र.	3	3 &	তের
शरीरत्रय, पंचकोश (टी.)	爾.	3	39	92
कोशयिचार का प्रयोजन (हिं.)	ब्र.	3	39	৩ ২
मनोमय	a .	3	80	197
कोशों का भीतरीपन (हिं.)	ब्र.	3	80	0 7
आनन्दमय	ब्र.	3	४२	৩ ২
आनंन्दमय सर्वान्तर है या नहीं – इसकी प		-3		7501
(a .)	ब्र.	3	8.5	७२
बाह्य कोश की आंतर कोश से पूर्णता (हिं.		3	88	19 2
कोशोपन्यास उपासनार्थ नहीं (टी.)	ब्र.	3	४६	७२
रसयाक्य क्यों ? (टी.)	ब्र.	3	४६	ত ২
रसात्मकता	я.	3	80	७२
आनंदरूप आकाश		3	55.00	

ब्र.	3	40-42	७२८
ब्र.	3	48	७२८
ब्र.	3	44	७२८
ब्र.	ą	44	७२८
ब्र.	3	५७	७२९
ब्र.	3	49	७२९
я.	3	€ 0	७ ३0
ब्र.	3	६२-६३	Ø ₹ ()
ब्र.	3	६४	७३०
ब्र.	3	६५	७३१
ब्र.	3	६७	७३१
ब्र.	3	६८	७३२
ब्र.	ą	६९-904	७३२
ब्र.	3	905-900	७३३
ब्र.	3	908-999	७३४
ब्र.	3	992-990	७३५
ब्र.	8		७३६
ब्र.	8	9	७३६
ब्र.	R	2	७३६
ब्र.	8	3	७३६
ब्र.	Я	4	०६०
ब्र.	X	Ę	७३७
ब्र.	8	৩	७३७
ब्र.	٧	90	SEQ
ब्र.		99	७३८
ब्र.	8	99-93	५ ६७
я.	X	98	७३९
	व्र. व्र. व्र. व्र. व्र. व्र. व्र. व्र. व्र.	ज. ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३	ज. ३ ५५ ज. ३ ५५ ज. ३ ६० ज. ३ ६० ज. ३ ६५ ज. ३ ६८ ज. ३ ६८ ज. ३ १०६-१०७ ज. ३ १०६-१०७ ज. ३ १०६-१०० ज. ३ १०६-१०० ज. ३ १०६-१०० ज. ३ १०१-१०० ज. ३ १०१-१०० ज. ३ १०१-१०० ज. ३ १०० ज.

अधिषयरूप से ज्ञात	7	- 2		1
'अविषय' का भी अविषय (हिं.)		8	9 €	03
प्रकाश-अव्यभिचार से मत	ब्र	8	9 ६	v :
कर्तृतया भान गलत	ब्र	8	96	७४
2.00 P. 2005 P	ब्र	8	9 9	98
विद्या का ब्रह्म से सम्बन्ध नहीं (टी.)	ब्र	8	२६	(2)
प्रत्यगात्मा में अविद्या नहीं	ब्र	8	20-30	9
प्रकाशादित	ब्र	8	3 9	101
मौन ही संगत	ब्र	8	3 2	ری
ज्ञानी के लिए क्रियादि नहीं	ब्र	8	३ ५	(9)
जीवित रहते ही ज्ञान पा लेना चाहिये	ब्र	8	88-84	(0)
विद्याफल	ब्र	¥	४६	W)
स्वप्नवत् बद्ध-मुक्तव्यवस्था	ब्र	8	४७	103
विद्वत्प्रवृत्ति की उपपत्ति (हिं.)	曻	8	86	19 %
एक आत्मा बद्ध और मुक्त कैसे (टी.)	ब्र	x	88-86	10 2
यावत्पारब्ध अनुभूतियाँ	ब्र	Х	40-48	193
ब्रह्मातिरिक्तका दर्शन नहीं	я	8	५५—५६	S
विद्वान् की सदा समाधि	ब्र	8	42	(0)
अभेद भी आध्यासिक	ब्र	Я	६ 9	93
डिाय से अतिरिक्त माया नहीं	ब्र	8	६३	1978
सब प्रमाणों की परम निष्टा	ब्र	8	६७−७ 0	() (
ज्ञान शिय को ही	ब्र	8	09	100
शिवकृपा से ही ज्ञान	ब्र	¥	103-64	6
यसकथा	ब्र	8	८६	10
गुरु के आलोकन से रुद्रप्रसाद	я	٧	998	0
प्रसाद के लिंग	ब्र	8	929-928	(9)
परमादैतियज्ञानी की प्रशंसा	ब्र	×	989-986	o
विद्याप्रतिबन्धक	¥	8	980-949	O
ज्ञाननिष्ठा होने का विधान	a	8	942	v

आदेशकथन (छान्दोग्य षष्ट य सप्तम व	តា			
संग्रह)	ब्र	4		950
आदेश का वैशिष्ट्य	ब्र	4	9	७६१
कार्य की कारण से अनन्यता	ब्र	4	3-8	७६१
कार्य-कारण का भेद अंसगत	ब्र	4	4	७६१
घ्यंस कार्य नहीं	ब्र	4	98	७६३
कार्य सदसदात्मक नहीं	ब्र	4	98	७६५
भ्रमसिद्ध भेद	व्र	4	२१—२२	७६५
विकार वाचारंभण	ब्र	4	23	७६५
कार्य के दो रूप (टी.)	ब्र	4	28	७६६
कारणविज्ञान से सर्वविज्ञान	ब्र	4	२६	७६६
भेदनिराकरण	ब्र	4	26	७६७
अभित्र-निमित्तोपादान	ब्र	4	39-37	७६७
माया नहीं मायी कारण (हिं.)	ब्र	4	3.8	७६९
असत्कारणनिरास	ब्र	4	३७—४५	७६९
अभावकारणता और प्रतिबंधकाभावकारणत	ता का			
खण्डन (हिं.)	ब्र	4	36-80	000
सृष्टि	я	4	४७	१९७
गुणोपसंहार (टी.)	ब्र	4	86	600
पंचीकरण	ब्र	4	40-48	७७३
नाम-रूपव्याकरण	ब्र	4	५६	800
कारण-अव्यतिरेक का उपपादन	ब्र	4	40	७७५
अनादि भ्रम	ब्र	4	€ &	७७६
सत्यवस्तु का ज्ञान भ्रम के लिये अनाव	ा ञ्यक			
(ft.)	ब्र	ų	६४	७६६
इवेतकेतुविद्या	ब्र	4	७५	200
महावाक्याविवरण (हिं.)	, ब्र	4	७५	200
त्वम् व अहम् शब्दों का अर्थ	ब्र	4	७६	७७९
लक्ष्यार्थ	ब्र	ų	७७	020
वाच्यों की एकता अनिष्ट	ब्र	4	७८	929

				[41
वाक्यार्थ	ब्र	4	63	620
स्बप्रकाशतासमर्थन	ब्र	4	ξS	७८२
अज्ञान यह वार्ता भी व्यर्थ	ब्र	4	20	E26
श्रुति में अन्यार्थवर्णन तात्पर्यतः नहीं	ब्र	4	900-908	500
अनुसंधान का प्रकार	ब्र	4	909	1966
भावना की अपेक्षा नहीं	ब्र	٩	9 7 3	७९१
तत्त्वमसिपर्यायों का संग्रह (टी.)	ब्र	4	926	७९२
ईश्वरोपदेश (भूमिवद्या)	ब्र	4	984-904	હવ્ય
आत्मेतरविद्यावैद्यर्थ	ब्र	ų	969-990	409
भेद में अल्पता	ब्र	4	999	۶ () ک
भूमा सुख	ब्र	ų	993	٤() ع
दहरोपासना	a	Ę		802
ब्रह्मपुर में आकाश (हिं.)	ब्र	Ę	9	٤() ٧
आत्मा में स्वाभाविक संकोच नहीं साक्षी को ज्ञात व अज्ञात रूप से सब ब	ब्र ज	Ę	ą	۷04
भान	 व्र	Ę	8	۷) د
बाह्यप्रकाश की अन्तराकाश में समानता	ब्र	Ę	٩	۵() ٤
अपहतपाप्पत्यादि	ब्र	Ę	90-99	۷() و
पुण्यप्राप्य फल क्षयिष्णु	ब्र	Ę	9 3	۷0٥
सौषुप्त ब्रह्मप्राप्ति व्यर्थ क्यों ?	ब्र	Ę	94-95	۷00
हृदयञ्जन्दार्थ	ब्र	ξ	99	200
ब्रह्मप्राप्तिप्रकार	ब्र	Ę	96-99	202
ब्रह्म सेतु	ब्र	Ę	3.9	208
प्रजापति का उपदेश	ब्र	Ę	२५	490
सशरीर की दुःसनिवृत्ति नहीं	ब्र	६	26	690
ब्रह्म की कार्यों में अनुगति	ब्र	Ę	₹3−₹0	699
शिव की सर्वोत्कृष्टता	ब्र	Ę	48	698
बस्तु का स्वरूप (मुण्डकोपनिषत्)	ब्र	৩		694
अक्षर तत्त्व	ब्र	v	9	294

े] एक विज्ञान से सर्वविज्ञान	ब्र	ß	4	69
परा य अपरा विद्या	ब्र	u	3	290
अद्रेश्य आदि विशेषण	ब्र	ø	ξ-0	498
भूतयोनि में दृष्टान्त	ब्र	ø	4-5	690
संसारमिथ्यात्व (हिं.)	ब्र	ø	۷	694
जग्दुत्पत्तिक्रम	ब्र	G	90	690
त्रिविध, द्विविध व एक सत्ता (हिं.)	ब्र	19	9 २	696
ज्ञान से ही मोक्ष, कर्म से नहीं	ब्र	ø	93-29	696
जीवों का शिव से अव्यतिरेक	ब्र	lo	23	63(
निरुपाधिस्वरूप	ब्र	ø	28	८२(
विराट् भी झिव से उत्पन्न	ब्र	৩	२६	653
'रूपोपन्यास' ब्रह्मसूत्र पर विचार, भाष्यसामंजस	प			
(हिं.)	ब्र	ø	२६	٧२9
पंचारिनक्रम	ब्र	Ø	२७	८२३
पुरुष ही सब कुछ	ब्र	G	39-33	۷٦3
ठ लक्ष्यवेधन	ब्र	Ø	३५−३७	658
अरणिमन्थन	ब्र	v	3.€	658
अन्यवाग्विमोक	ब्र	Ø	٠ ٨٥	८२५
मनोमय अक्षर	ब्र	v	४२	634
ज्योतियों का ज्योति	ਕ	v	88	6
शिव का अनुभान अन्य करते हैं	ब्र	O	४६	646
दो सुपर्ण	ब्र	G	४९	630
व्यधिकरणधर्मायच्छिन्नप्रतियोगिताक अभाव (हिं.)	ब्र	G	५३	626
वीतशोकता	ब्र	O	46-60	८२९
पुक्ति	ब्र	G	₹9−₹३	۷ ۽ ۵
परमसाम्य	ब्र	ø	€8-03	€ € 0
आत्मरति आदि	ब्र	ø	08-04	233
विद्या के सहकारी साधन	ब्र	Ø	৩৩	٤ ۽ ي
विद्या के असाधारण हेतु	র	Ø	69	638

				[43
आत्मवेता सदा पूज्य	育	v	64	234
प्रयचन आदि साधन नहीं	ब्र	Ø	८६	634
मुमुक्षा (हिं.)	ब्र	v	८६	634
संन्यास	爽	ø	۷۵	638
तपः शब्द का अर्थ (हिं.)	ब	৩	. ८७	235
'बेदान्तविज्ञानसुनिश्चितार्थाः' आदि बाक्य	ब्र	ø	29	८३६
कलायिलय	ब्र	v	9.0	OFS
एकीभाव में दृष्टांत	ब्र	v	99	252
ब्रह्मज्ञान से ब्रह्म	ब्र	v	99	252
तत्त्ववेदनविधि (कैवल्योपनिषत्)	ब्र	۷		9 € 3
तत्त्व वेदनीव	ब	۷	9	८३९
श्रद्धा, भक्ति, ध्यान, योग (टी.)	ब्र	6	₹	9 5 5
योगोपदेश	ब्र	۷	Ę	680
ब्रह्मा, इन्द्र आदि एक ही तत्त्व हैं	ब्र	۷	98-94	689
ज्ञानातिरिक्त मोक्षमार्ग नहीं	ब्र	۷	9 Ę	685
अवस्थात्रव	ब्र	۷	₹ 9 - 7 ₹	683
दुःख आभास को, लीला (हिं.)	ब्र	۷	२ ५	683
ज्ञिव निर्दुःख	ब्र	۷	२६	588
विस्व, तैजस, प्राज्ञ	ब्र	۷	₹9	684
जीव-ईइवर-एकत्व	ब्र	۷	34	८४६
'तत्त्वमसि' का बोधक्रम (हिं.)	ब्र	۷	89	288
माया, अविद्या	ब्र	۷	४२	283
'वह तू, तू वह' का अर्थ	ब्र	۷	88	282
जीवन्मुक्त का अनुसंघान	ब्र	۷	४६	289
शिव विशेष चिन्तनीय	ब्र	۷	48	240
बृहदारण्यकोपनिषद्ध्यास्या (मैत्रेयी ब्राह्मण)	ब्र	9		640
आनंद परप्रेमास्पद	ब्र	9	9	۷40
स्वप्रकाश आनंद (हिं.)	ब्र	٩	9	۷٩0

	722	2	2 0 3	649
सब अपने लिए प्रिय	ब्र	9	₹-9३	
श्रिवणादि विधेय, उनका स्वरूप (हिं.)	ब्र	9	94	८५३
श्रवण अंगी (टी.)	ब्र	9	94	643
ज्ञान से दुःखनिवृत्ति व परमानंदप्राप्ति	ब्र	9	98-90	648
भेददर्शन से हानि	ब्र	٩	96	648
अन्यबुद्धि संसारहेतु है	ब्र	9	२ २	८५५
, संसार-उच्छेद	ब्र	9	23	244
अन्य शास्त्रों का परस्पर सामंजस्य नहीं	ब्र	9	२५-२८	८५६
अबैत प्रशंसा	ब्र	9	३५-४५	८५७
भेदाभेदनिरास	ब्र	9	४६	८५९
बैतवादनिरा स	ब्र	٩	४७	649
ज्ञानी दुर्लभ	ब्र	٩	86	८५९
अवाच्य निष्ठा	ब्र	9	५६	८६१
बृहदारण्यव्याख्यान (तृतीय व चतुर्थ अध्याय				
का सार)	ब्र	90		८६१
उषस्तब्राह्मण का संग्रह	ब्र	90	9-0	689
आत्मसंनिधि से सकल चेष्टा	ब्र	90	2	८६२
अहमर्थ	ब्र	90	x	८६२
गीण व मिथ्या का भेद (हिं.)	ब्र	90	Х	632
दृष्टि का द्रष्टा	ब्र	90	Ę	८६३
नित्य व अनित्य दृष्टि (हिं.)	ब्र	90	Ę	८६३
वृत्ति, आकार, प्रकार (हिं.)	ब्र	90	Ę	632
गार्गीब्राह्मण का संग्रह	ब्र	90	8-99	८६५
ओत-प्रोत का अभिप्राय (हिं.)	ब्र	90	۷	644
साक्षी किसी में स्थित नहीं	ब्र	90.	96	८६७
अन्तर्यामी ब्राह्मण	ब्र	90	२०-२६	८६७
	ब्र	90	3.0	८६८
लोकनियन्तृता (हिं.) नियम्य-नियामक भेद से अद्वैतक्षति नहीं (हिं.)	ब्र	90	9.0	८६८
	ब्र	90	२६	८६९
अहुष्ट द्रष्टा		A. 185	(\$9. %))	-47

				[45
ज्योतिर्ब्राह्मण	ब्र	90	२७−३३	200
अनन्यत्व	ब्र	90	20	८७०
ज्योतिर्ब्राह्मण का संक्षिप्त प्रतिपाद्य (टी.)	ब्र	90	50	0.00
ज्ञाताज्ञातरूप से साक्षी की सर्वज्ञता	ब्र	90	\$ O	209
द्रष्टा की अनङ्गर दृष्टि	ब्र	90	3 2	209
परा संपत्, परा गति	ब्र	90	3 3	८७२
ज्ञानी को शरीर में आत्मबुद्धि नहीं	ब्र	90	₹ 8	202
'नेह नानास्ति'	ब्र	90	34	८७२
एकघा दर्शन	ब्र	90	30	८७३
शास्त्र से जानकर साक्षात्कार करना ('विज्ञाय				
प्रज्ञां कुर्यीत')	ब्र	90	3.6	८७३
महान् अज आत्मा	ब्र	90	₹ 9	৫৩३
निरंकुश ईशानता	ब्र	90	80	८७४
सेतुता का अभिप्राय (टी.)	ब्र	90	85	208
विविदिषु	ब्र	9 O	83	208
निषेधमुख से प्रतिपादन	ब्र	90	88	204
ब्रह्मयेत्ता की नित्य महिमा	ब्र	9 O	४६	2.98
ज्ञम, दम आदि	व	90	४७	205
विद्वान् का कर्मों से संबंध नहीं	ब्र	90	40	८७७
गुरु के लिए सर्वस्व प्रदेय	व	9.0	49	১৫৩
गुरुद्रोह का निषेध	ब्र	90	47	८७८
कठवल्ली और इवेताइवतरोपनिषत् की व्याख्या	ब्र	99		८७१
कठोपनिषत् का संग्रह	ब्र	99	१-५६	८७९
गुहानिहित गूढ तत्त्व	ब्र	99	9	905
आनुमानिकाधिकरण का संग्रह (हिं.)	ब्र	99	9	208
परतत्त्व धर्मादि से परे	ब्र	99	3	240
सर्ववेदप्रतिपाय	ब्र	99	3	640
अक्षर ब्रह्म	ब्र	99	8	240
श्रेष्ठ आलंबन	ब्र	99	4	669

Ž.

ज्ञातव्य का स्यरूप	ब्र	99	६-८	669
'मदन्य' नहीं जान सकता	ब्र	99	٩	663
शरीरों में अशरीर	ब्र	9 9	90	663
ब्रह्मज्ञान के लिए प्रयास नहीं (हिं.)	ब्र	99	99	622
दुराचारत्याग आवश्यक	ब्र	99	9 3	663
शरीरधारी और शंकर	ब्र	99	98	668
गुहाधिकरण का विस्तृत निरूपण (हिं.)	ब्र	99	98	664
रथरूपक	ब्र	99	9 &	८८७
परमपद	ब्र	99	२४	666
इंद्रियादि से पुरुष की परता	ब्र	99	२५–२६	८८९
पुरुषनिरुक्ति	ब्र	99	२७	۷۶۵
दर्शनोपाय	ब्र	99	38	۷٩0
अशब्दादि स्वरूप	ब्र	99	₹0	۷۹ ۹
पराङ्मुख इंद्रियाँ	ब्र	99	₹ 9	८ ९9
अधिगमोपय	ब्र	99	a a	८९२
साक्षी	ब्र	99	₹8	693
भेददर्शन मृत्युहेतु	ब्र	99	₹0	693
भेदोपलब्धि का उपपादन	ब्र	99	3,5	648
नित्यों का नित्य	ब्र	99	४२	८९६
प्रमाण के विना सिद्धि (हिं.)	ब्र	99	8.8	८९६
सूर्यादि शिव को विषय नहीं करते	ब्र	99	88	८९६
सनातन अञ्चत्थ	ब्र	99	४५	690
महाभयहेतु	ब्र	99	४७	292
शरीर रहते मोक्ष पा लेवे	ब्र	99	86	292
विवेक	ब्र	99	43	699
मनीषा और मनन की साधनता	ब्र	99	44	900
इवेताइवतरोपनिषदर्थविस्तर	ब्र	99	40-09	909
प्रकृति अश्रौत, इयेताश्यतर में माया (हिं.)	ब्र	99	40	909

8 800 III _				[47
ब्रह्म के विविध रूप	ब्र	99	46	₹ 0 ३
बह्मचक्र (संसारचक्र)	ब्र	99	48	803
जीव-ईक्वर का अभेद	ब्र	99	€0	€09
क्षर-अक्षर	ब्र	99	Ę 9	608
डानफल	ब्र	99	६२	808
भोक्ता, भोग्य, प्रेरिता	ब्र	99	६३	408
प्रणय से ब्रह्मबोध	ब्र	99	Ę&	904
सत्यादि साधन	ब्र	99	६६	905
दूध में घी की तरह आत्मा सर्वव्यापक	ब्र	99	६७	९0६
उपनिषत् ज्ञब्दार्थ (टी.)	ब्र	99	६७	908
ज्ञान से ही मोक्ष	ब्र	99	६८	900
अत्याश्रम	ब्र	99	٥٥	202
देय व गुरु में भक्ति अनिवार्य	ब्र	99	৩ 9	904
शिव अहम्प्रत्ययाश्रय	ब्र	9 २		208
प्रत्यग्ब्रह्माभेद	ब्र	9 2	2	909
मुमुक्षा, ञमादि	ब्र	9 2	8	909
परा विद्या से अविद्याविलय	ब्र	9 2	७ –۷	909
उपलक्षणनिरूपण (हिं.)	ब्र	9 3	U	909
भाव और अभाव दोनों नहीं बचते	귏	9 7	9	990
अविद्यानिवृत्ति अतात्त्विक	ब्र	9 २	90	999
ज्ञान-अज्ञान	ब्र	9 २	9 3	899
उपकारक अज्ञान	ब्र	9 २	98	999
सत्यत्व के अभ्युपगम से साधनोपदेश	ब्र	9 2	94	999
संसार का प्रवर्तक व निवर्तक	ब्र	9 7	9 ६	899
चित्तपाकानुसार उपदेश	ब्र	92	96-98	999
निर्वाणनिष्ठ परयोगी	ब्र	9 २	२0−२६	999
गुरुसेवा	ब्र	9 २	₹0-₹७	993
गुरु कौन ?	ब्र	9 2	89-88	898

साम्प्रदायकिता-प्रतिज्ञा	ब्र	9 2	86	995
अनिञ्चय से मूर्धापात	ब्र	9 2	43	990
शंकर-नृत्य	ब्र	9 2	६१	996
ब्रह्मगीता की फलश्रुति	ब्र	97	६८	999
पाटनाधिकारी	ब्र	97	٥0	999
सूतगीता	सू	9-6		9 2 9
सूतगीति	Æ	9		979
मुनिकृत सूतस्तव	सू	9	8-99	979
संसार हेय (हिं.)	Æ	9	Ø	999
आत्मा से सुष्टि	सू	. २		९२७
स्यतःसिद्ध कर्ता	सू	2	2	१२७
आत्मा सच्चिदानन्द (हिं.्)	सू	2	3	979
पाञ	सू	7	3	१२८
पञ्च, ज्ञिय	सू	2	4	926
संसारबीज	सू	4	v	976
जीवभेद, परमात्मभेद	सू	2	8-5	979
कारण, ज्ञाता, अंतर्यामी, साक्षी (हिं.)	सू	3	9	929
जीवेश्वर-विभाग	सू	9	90	979
जीयभेद में हेतु	₹.	3	93	630
परमेक्चरभेद में हेतु	सू	4	98	930
रुद्रादि की उच्चायचता	सू	٩	94	₹₹0
रुद्र की सात्त्विकता	सू	2	94	9 ₹ 0
विष्णु तामस	सू	3	9 ६	939
त्रिमूर्ति का परतत्त्व से अभेद	₹.	3	₹0-₹9	9 4 9
रुद्रोत्कर्ष	सू	?	23-39	939
रुद्रपूजा उत्तम-साधन	स्	9	3 २	933
गलत निश्चय से संसरण	Ħ.	2	३५−३६	933
रुद्र सात्त्विक	सू	2	я0	938

शिवज्ञान मुक्तिसाधन	10010			[49
10-10-10-10-10-10-10-10-10-10-10-10-10-1	सू	2	8.6	934
हरि, ब्रह्मा आदि ईश्वर ही हैं, जीव नहीं	सू	٦	49	९३६
पौराणिक लीलाओं का सामंजस्य	सू	3	44-46	९३६
अद्वैत का गलत प्रयोग	सू	3	६३	९३७
ऐक्य और असमानता की उपपत्ति (हिं.)	सू	2	६३	९३७
पौराणिक आदि वाक्यों का समन्वय	सू	9	६७-६९	936
सब कुछ शिव है	Ħ.	3	७३	939
सामान्य सृष्टि	सू	3		989
शिव से सृष्टि का आविर्भाव	सू	ą	9	989
अदितीय निर्मल शिव कारण	सू	3	₹	989
अजाति और अध्यारोप (हिं.)	सू	3	8	989
तर्क अस्वतन्त्र	सू	3	Ę	989
वेदप्रामाण्य-नैयायिक, मीमांसक और वेदान्तियों	के			
मत से (हिं.)	सू	3	v	685
अनादिश्रुति प्रमाण	₹.	3	۷	683
स्वतः या परतः दोष असंभव	₹	ą	9-94	683
स्वतः प्रामाण्य (हिं)	सू	3	9.5	688
आप्तत्वपरीक्षा (हिं.)	सू	3	919	984
शिव की आप्तता	सू	3	96	985
्वस्तुतः वेद अनादि	सू	ą	29	988
शास्त्रीय अर्थ में तर्कमूलक प्रश्नों का अवस				
नहीं (हिं.)	सू	ą	२६	980
शिवस्वरूप में श्रुति ही प्रमाण	सू	3	२८	289
विवर्ताश्रयण	सू	ą	28	686
माया	Ą	3	₹0	989
वेद ही निर्विरुद्ध प्रमाण	सू	ą	33	940
शिवेद्ध वेद	सू	3	36	949
वेद के बिना शिव प्रमाण नहीं	स्	₹	80	949
शिवभक्त स्वतंत्र	सू	3	४७	९५२
ज्ञान से ही मोक्ष	सू	Ę	५२	943
	4200	200		

	Tr (2, €)				
	अद्वैतिविज्ञान में प्रमाण	सू	ą	५३	943
	तर्क से अखण्ड्य	सू	Ę	48	९५३
	भेदाभेद-निरास	सू	3	५७—६१	९५४
	प्रसाददीर्लभ्य	सू	3	£ 8	944
	विशेषसृष्टि	सू	8		९५६
	अभिन्न मायी जगत्कर्ता	सू	8	9	९५६
	माया परतंत्र है (टी.)	Ħ.	8	9	९५६
	शिव व माया में भेदकल्पना	₹	8	२	९५६
	अनुप्रवेश	सू	8	4	९५७
	रुद्रादि	सू	8	Ę	945
	परमात्मा से ही भूतसृष्टि	सू	8	90	946
	गुण-गुणिभाव वैशैषिकों की तरह नहीं (हिं.)	सू	8	90	846
	अंतःकरणादिसृष्टि	सू	8	99	942
	रुद्रादि औपचारिक स्रष्टा	सू	8	9 ६	949
	समस्टि से व्यष्टि की उत्पत्ति	सू	R	90	949
	ज्ञानेन्द्रियादि के देवता	Ų	8	₹ ₹	९६0
	स्थूलसृष्टि	सू	8	26	९६१
1	मायिक सब माया ही	Ą	8	₹ २	९६२
	माया भी शिव ही	Ą	8	ĘĘ	९६२
	जगदात्मदर्शन से बंधन; सर्वब्रह्म दर्शन से मोक्ष	सू	8	३७-४0	१६३
	ज्ञानसोपानक्रम (टी.)	सू	8	89	१६४
	सद्योमुक्ति का हेतु	ф	8	४२	९६४
	न देखते हुए देखना	ď	8	8.3	९६४
	जीवन्मुक्ति की स्थिति	सू	8	88-84	९६४
	स्वप्रकाशता (हिं.)	Ą	8	84	९६५
	आत्मस्वरूप	ग ू	4		९६६
	अहमर्थवियेक	सू	ų	3	९६६
	इदमर्थ अनात्मा, अहमर्थ आत्मा	सू	4	0-6	९६७

				[51
शरीर द्विविध बुद्धिका विषय	सू	4	9	९६७
बुद्धि जड है	सू	٩	9.8	९६८
आत्मा ही अहमर्थ	सू	4	96	९६९
स्वप्रकाशतासाधन	d	4	99	९६९
वृत्ति का विनियोग	सू	ų	3.0	९६९
चैतन्य ही भासक	सू	4	₹9	900
भ्रम से कर्तृत्वादि	सू	4	२५	900
'गौः' ज्ञान का विषय है गोत्व	सू	4	26	969
अहंबुद्धि भिन्नविषयक नहीं	सू	4	28	९७१
अहंशब्द की भिन्नार्थता की उपपत्ति	सू	4	₹0	९७२
आकृति से शब्द का संबंध, व्यक्ति से नहीं	सू	4	३१−३२	९७२
चिदात्मा ही अहंशब्दार्थ	सू	4	३५−३८	९७३
अहंकार अहंशब्द का गौण अर्थ	सू	4	₹ ९	९७३
आत्मस्यरूप	₹	4	89-82	908
साक्षी ब्रह्म	Ą	ų	४५	९७४
वाक्यार्थ	सू	4	86	९७५
ज्ञाननिष्टा में क्रम	सू	4	40	९७५
साधनसंक्षेप	सू	4	9	१७८
सर्वशास्त्रार्थसंग्रह	सू	Ę		909
साक्षाद् भी आत्मा दुर्दर्श	सू	Ę	?-4	९७९
सच्चिदानंद साम्बमूर्ति	सू	Ę	9 3	969
अवतार भी ईश्वर, न कि जीव	सू	Ę	98	969
जीवेश्वरभेदनिरास	सू	Ę	94	929
विष्णु आदि उपास्य	सू	Ę	99	923
परतत्त्व प्राधान्येन ध्येय	Ą	Ę	२३	923
कार्यदेवता अप्रधानतया ध्येय	Ħ	Ę	₹8-₹0	967
सब छोड़कर एक शिव ही ध्येय	Ą	Ę	₹ 9	१८३
आथर्वण दुम	Æ	Ę	33-34	828

रहस्यविचार	सू	৩		964
ध्यानादि साधनविधि	सू	Ø	2-23	924
ज्ञानियों में देवतावस्थान	सू	O	२४	228
साधकों में देवतावस्थान	सू	Ø	२ ५	929
तांत्रिकों में देवतावस्थान	सू	O	२६	929
लौकिकों में देवतावस्थान	Ą	O	२७	929
किसी का अवमान न करे	सू	19	38 .	929
अप्रियभाषण न करे	₹.	0	₹ 9	929
हिंसा न करे	सू	vo	₹ २	929
अंकन न करे	स्	ø	₹ ₹	929
सर्ववेदान्तसंग्रह	सू	۷		990
शिव की असाधारण मूर्ति	सू	۷	२	990
परतत्त्व की विभूतियाँ	Æ	۷	8	990
सद्विलक्षण माया	सू	۷	4	999
ज्ञान से ही मोक्ष	सू	۷	Ę	999
वास्तविक प्रमा (हिं.)	Ą	۷	Ø	888
यज्ञादि यियिदिषाहेतु	Æ	۷	۷	992
ज्ञान के अंग	Æ	۷	99	993
यक्तव्य की समाप्ति	सू	۷	9.9	998
अधिकारिभेद से शास्त्रभेद	₹ <u></u>	۷	74	994
वैदिक के तुल्य कोई नहीं	सू	۷	40-59	299
व्यासकथन	Ą	۷	६७	9000
सूतगीता की फलश्रुति	₹.	۷	02-69	9009
यज्ञवैभवखण्ड की फलश्रुति	सू	4	62-63	9003
सूतसंहिता की महत्ता	₹.	2	28-24	9003
सूतसंहिता की फलश्रुति	सू	۷	८६-८७	9003
ग्रन्थान्त में मंगल	Ą	۷	66-69	9003